चन्द्रमणी

॥ ओ३म् ॥

'सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते' मनु

कन्यागुरुकुल-महाविद्यालय देहरादून

का

१६ वां वार्षिक वृत्तान्त

चैत्र सम्वत् १९९५ से फाल्गुन १९९६ वि० तक

प्रकाशक —

अध्यक्ष कन्यागुरुकुल, देहरादून ।

मुद्रक —

पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार, पालीरत्न

अध्यक्ष भास्कर प्रेस, देहरादून

आश्विन १९९७

...३म

कन्या-गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

का

१६ वां वार्षिक वृत्तान्त

(चैत्र सम्वत् १९९५ से फाल्गुन १९९६ तक)

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।

ब्रह्मचर्य और तप के बल से ही विद्वानों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है ।

ओ३म् यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति ।
स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥

जो परमपिता परमात्मा भूत, भविष्यत् और वर्तमान के व्यवहारों को यथावत् जानता है तथा सब जगत् को अपने ही विज्ञान से जानता, रचता तथा लय करता है, तथा सब पदार्थों का स्वामी है, जो मोक्ष तथा व्यवहार सुख का देने हारा है, उस सर्वश्रेष्ठ, सर्व सामर्थ्य वाले पर ब्रह्म को हमारा अत्यन्त प्रेम पूर्वक नमस्कार है ।

लार्ड मेकाले की चलाई शिक्षा पद्धति के दुष्परिणामों का अनुभव ज्यों २ भारतवासियों को होता गया त्यों २ हमारे देश में असन्तोष की लहर उत्पन्न होती गई और लोगों का ध्यान उस आदर्श तथा प्राचीन शिक्षा प्रणाली की ओर गया जिसका आभास वेदभाष्य तथा सत्यार्थप्रकाश में महान् क्रान्तिकारी ऋषिदयानन्द ने शिक्षा के सम्बन्धमें किया था । परम कर्मनिष्ठ, श्रद्धेय, दिवंगत आत्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उसे देखा कर अपने गुरु के चरण-चिन्हों पर चलते हुये बालकों के लिये गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सम्वत् १९५८ वि० में

की। और तभी से बालिकाओं के लिये भी गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के अनुसार शिक्षा देने का भाव आर्य जनता के मन में जागृत हो गया था। वह समय ऐसा था कि बालकों की शिक्षा में ही परिवर्तन करना अति कठिन था, अतः बालिकाओं के लिये किसी कन्या-गुरुकुल की स्थापना करना तो नितान्त कठिन बात थी। इस बीच में कई सुधारकों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने २ विचार प्रकट किये। नई २ संस्थायें खुलीं और खुलकर बन्द भी हो गईं और कुछ टूटी-फूटी अवस्था में चल भी रही हैं। परन्तु वेद भगवान में वर्णित आदर्श गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, जिसकी नीव वर्तमान युग के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने डाली और जिसे उनके परम शिष्य हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने क्रियात्मक रूप दिया कई प्रकार की कसौटियों पर कसी जाने पर भी स्वच्छ दमकती हुई स्वर्ण प्रतिमा की भांति दूर २ के शिक्षा-सुधारकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही है। बड़े २ शिक्षा केन्द्र इसके मौलिक सिद्धांतों को स्वीकार कर अपने २ ढंगों को सुधार रहे हैं।

बालकों के गुरुकुलों की प्रसिद्धि देख कर जनता की ओर से प्रेरणा होने लगी कि बालिकाओं के लिये भी ऐसी संस्था बनाई जाय। साधनों के न होने के कारण कई वर्ष तक तो यह इच्छा कार्य रूप में परिणत न हो सकी। सम्वत् १९७९ में गुरुकुल कांगड़ी के २१ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिल्ली के सुप्रसिद्ध दानवीर स्वर्गीय श्री सेठ रघुमल जी ने घोषणा की कि यदि कन्या गुरुकुल की स्थापना की जाय तो वे इस कार्य के लिये १ लाख रुपये दान देने के लिये उद्यत हैं। फिर क्या था, इच्छा तो पहिले से विद्यमान थी, उत्तेजना की ही कमी थी, घोषणा होते ही तय्यारियां होने लगीं, कई विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी आर्य जनता के अदम्य उत्साह पर आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब लाहौर ने सम्वत् १९८० के कार्तिक मास में भारत की राजधानी दिल्ली नगरी के दरियागंज मुहल्ले में किराये पर एक विशाल कोठी लेकर दीपावली के सुअवसर पर इस अत्यन्तावश्यक अपने ढंग की निराली संस्था की स्थापना की। दीपावली से तीन दिन पूर्व कन्या-गुरुकुल की उस समय की कोठी में इस संस्था के सफल होने क कोई चिन्ह दृष्टि-गोचर नहीं होते थे। ऐसा सन्देह होता था कि कोई कन्या आयेगी भी अथवा नहीं। किन्तु ज्योंही प्रवेश तिथि आई त्योंही संरक्षकों पर संरक्षक दूर २ देशों से कन्यायें लेकर आने लगे और आरम्भ वाले

दिन ५० कन्यायें प्रविष्ट हो गईं। अधिक दूर होने के कारण जो कन्यायें प्रवेश काल में न पहुँच सकी थीं वे वर्ष के भीतर आती ही रहीं, जिस से वर्ष के अन्त पर चार मास में ही ५० के स्थान पर ८७ कन्याएं प्रविष्ट हो गईं और बाद में स्थानाभाव के कारण प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा। परम पिता परमात्मा का धन्यवाद है कि जो कन्यागुरुकुल शैशव काल में प्रथम चार श्रेणियों से किराये की कोठियों में आरम्भ किया गया था वह गत १० वर्षों से अपने निजी स्थान पर प्राचीन शिक्षा प्रणाली का राष्ट्रीय महाविद्यालय बन चुका है। उसका अपना स्थान और तमाम मकानात लगभग एक लाख रुपये के हैं और संचालकों के अदम्य उत्साह से दिन दूनी तरक्की करता जा रहा है।

इस कुल में वैदिक साहित्य के साथ २ गृहविज्ञान, गृहचिकित्सा, शिल्प कला, वाद्य, इतिहास, भूगोल, गणित, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, आर्यसिद्धान्त तथा विज्ञानादि अर्वाचीन विषयों की शिक्षा राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती है। गुरुकुल में उच्च मानसिक उन्नति के साथ २ ब्रह्मचर्य के नियमों का पूर्ण रूप से पालन कराते हुये व्यायामादि द्वारा उन्नति के लिये भी विशेष रूप से उद्योग किया जाता है। विगत ९ वर्षों में ४७ कन्याएं स्नातिका (ग्रेजुएट) बनकर तथा ३७ अधिकारी पास कर अपने २ घरों को चली गईं हैं। इनकी योग्यता वाग्मिता, व्यवहार-कुशलता, और उनकी सादगी तथा सरलता को देख कर जनता के अन्दर कन्यागुरुकुल के प्रति श्रद्धा पैदा होती जा रही है। आर्य जनता उनकी उपयोगिता को दिन प्रतिदिन अधिकाधिक अनुभव करती जा रही है। मंगलमय भगवान् वह दिन लावे जब इस कुल से निकली हुई स्नातिकायें सीता-सावित्री जैसी पतिव्रता, धर्म-परायणा और विदुषी बन कर देश और जाति का मुख उज्ज्वल करें।

कन्यागुरुकुल का वर्तमान स्थान और भवन

आरम्भ में यह गुरुकुल चार वर्ष तक कन्यागुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के नाम से देहली में दरियागञ्ज मुहल्ले में एक किराये की कोठी में रहा। किन्तु वहां का जलवायु अनुकूल न होने के कारण १ मई सन् १९२७ को अस्थाई रूप में देहरादून में लाया गया और अन्त में आर्य प्रति-निधि सभा की अन्तरंग सभा ने बहुत विचार विमर्श के पश्चात् अनुकूल तथा स्वास्थ्य वर्धक स्थान होने के कारण स्थाई रूप से

कन्यागुरुकुल को देहरादून में ही रखने का विचार किया। अस्थाई रूप में लगातार ६ वर्षों तक यह संस्था राजपुर रोड पर श्री ला० बलवीरसिंह जी रईस की तीन कोठियों में किराये पर रक्खी गई। किन्तु बाद में स्थायी भवन बनाने का निश्चय स्वामिनी सभा के अधिवेशन तिथि १९-१-८७ में हुआ और इस निश्चय के अनुसार समीप वाली तीन कोठियां खरीद ली गईं। कोठी नं० ६२ जिसमें ४२ बीघा भूमि है, १२ फर्वरी सन् १९३१ तदनुसार १ म फाल्गुन १९८७ को, तथा कोठी नं० ६० जिसमें १० बीघा भूमि है २३ नवम्बर १९३१ तदनुसार ८ कार्तिक १९८८ को, और कोठी नं० ६४ जिसमें १० बीघा जमीन है २३ नवम्बर १९३५ तदनुसार कार्तिक १९९२ को क्रय की गईं। इन सब की लागत ४३८२६।।)।। है। इस वर्ष के महोत्सव पर श्री १०८ पूज्य महन्त लक्ष्मणदास जी ने कोठी नं० ६४ के पीछे लगी हुई भूमि ६ बीघा ७ बिस्वा २५४०) के मूल्य की कन्यागुरुकुल को दान में दी है। इसके अतिरिक्त निम्न प्रकार परिवर्तन तथा परिवर्द्धन कर आवश्यकता पूर्ति के लिये स्थान बनाये गये:—

(१) **जलसंग्रहालय**—(वाटर रिजर्वायर) पानी की कठिनाइओं को दूर करनेके लिये १० हजार गैलन पानीकी टङ्की पानी जमा रखने के लिये ५००) की लागत से बनाई गई, जिस से जल की कठिनाई का प्रश्न हल किया जा सका। इसके अतिरिक्त मेन लाइन से समस्त अहाते में नल आदि लेजाने में लगभग १०००) व्यय किया गया है। इस प्रकार जलके अभाव की पूर्ति की गई।

(२) **उपगृहों तथा भवनों में परिवर्तन तथा परिवर्द्धन**—अध्यापिकाओं के रहने के लिये कोठी नं० ६० के उपगृहों में परिवर्तन तथा परिबर्द्धन किया गया है, जिस पर लगभग ४०००) व्यय हो चुका है। किन्तु स्थानाभाव अब तक भी बना हुआ है।

(३) **भोजनभण्डार तथा भोजनशाला**—कोठी नं० ६२ के उपगृहों में से कुछ का परिवर्तन तथा परिवर्द्धन कर भोजन-शाला बनायी गयी है। इसके साथ २ ही १२′ × १५′ के

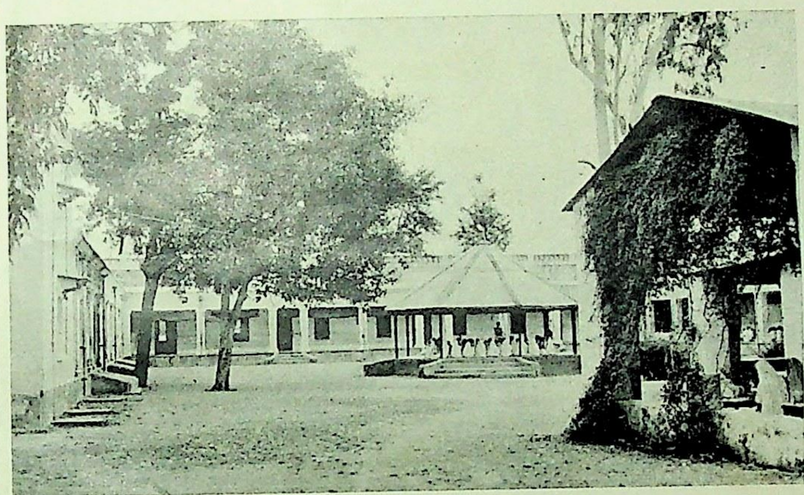
दो कमरे भोजन भण्डार (स्टोर) के लिये बनाये गये हैं। कमरों की लागत ५००) तथा परिवर्द्धन पर ५००) के लगभग व्यय कर काम चलाऊ बनाया गया है। इसके अतिरिक्त ब्रह्मचारिणियों के बैठकर भोजन करने के लिये एक पक्की भोजनशाला ५००) की लागत से श्रीमान् ला० धर्नीराम जी भल्ला लाहौर निवासी के दान से बनाई गई, जिसमें १०० कन्यायें बैठ कर भोजन कर सकती हैं, शेष के लिये ४००) की लागत से एक टीनशेड बनाया हुआ है। लगभग ९००) की लागत के दो कमरे कन्यागुरुकुल की भण्डारिन श्रीमती लालदेवी जी ने अपनी लागत से बनाये हैं जिसमें एक में शाक भाजी तथा फल रखे जाते हैं और दूसरे कमरे में वे स्वयं रहती हैं। भोजनशाला तथा भण्डार का स्थान अभी अपर्याप्त है, इसके नकशे आदि बने हैं, जिनका आनुमानिक व्यय ६०००) है। दो कमरों की बुनियाद (प्लेन्थ) तक भरी हुई है किन्तु धनाभाव के कारण पूरे नहीं किये जा सके। भोजनशाला निर्माण के लिये श्रीमती कुंवरानी जी (धर्मपत्नी सर जगदीसप्रसाद जी) ने २०००) एकत्रित करके भेज भी दिये हैं, अब ४०००) की और कमी रहती है। आशा है कि कोई विद्याप्रेमी दानशील सज्जन इस आवश्यकता को अनुभव कर शीघ्र ही इस कमी को पूर्ण कर देंगे।

(४) **चिकित्सालय**—भोजन भण्डार से पूर्व की ओर कुछ फासले से पुरानी कोठी के मोटर गैरेज तथा अन्य दो कच्चे कोठी में आवश्यक परिवर्तन तथा परिवर्द्धन कर रोगीगृह तथा उसके साथ ही छोटी २ कोठड़ियों में डिस्पेन्सरी रखी गई है। पहले रायसाहब रामचन्द्र जी एग्ज़क्यूटिव इन्जीनियर की कृपा से ढाई-तीन सौ के व्यय से इन्हें काम में लाने योग्य बनाया गया, किन्तु पीछे से श्रीमान् सरदार मेहरसिंह जी लाहौर निवासी के ५००) तथा मेजर कुंवर शमशेर बहादुर देहरादून के ५००) के दान से दोनों बोर्डों (कमरों) को सुन्दर तथा आवश्यक परिवर्तन कर १०-१२ रोगिणियों के रहने योग्य बनाया गया है।

(५) **विद्यालय आश्रम**—सम्वत् १९९० में लगभग १०० कन्याओं के लिये सुन्दर और स्वास्थ्य-वर्द्धक पक्का आश्रम बनाया गया, इसमें दो विंग तय्यार कराये गये, जिसकी लागत १९,५०१) है। तीसरा विंग ५० कन्याओं के लिये १९९२ में १०,०००) की लागत से तय्यार करवाया गया। इन तीनों विंगों में १५० कन्याओं की रिहायश का स्थान है, किन्तु सप्तम श्रेणी तक २०० से भी कुछ अधिक कन्यायें हैं अतः १९९५ तक इन विंगों के वरामदे भी प्रयोग में लाये जाते रहे हैं। महाविद्यालय तथा अधिकारी श्रेणी की लगभग ५० कन्याओं के लिये जो पहले टिनशेडों में रहा करती थीं सम्वत् १९९५ में आश्रम के साथ ही एक वरामदा और दो विंग जिन में ८० से भी अधिक कन्याओं की रिहायश का स्थान है तैयार किये गये जिस पर १५०००) व्यय हुआ। इसके साथ ही लगभग २०००) के व्यय से सुन्दर शौचालय तैयार किया गया। इस समय कन्याओं की संख्या २५७ है किन्तु आश्रम में २३० का ही स्थान है। अब भी वरामदे आदि का प्रयोग में लाकर ही निर्वाह होता है। अतः महाविद्यालय के लिए आश्रम की आवश्यकता वैसी ही बनी हुई है।

(६) **अतिथिशाला**—श्रीमान् बा० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए०, चीफ जज टिहरी-गढ़वाल स्टेट की धर्मपत्नी तथा बाबू साहब के छोटे भाई श्री बाबू प्यारेलाल जी रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज की धर्मपत्नी जी के १२००) के दान से सम्वत् १९९० में १२′ × १५′ के दो कमरों की, स्नानगृह वराण्डे आदि सहित धर्मशाला बनाई गई थी। अनुमान १२००) का था, किन्तु उसपर १७००) व्यय हुआ जिसकी पूर्ति धर्मपत्नी स्वर्गीय जमीयतराय जी स्यालकोट निवासी के ५००) के दान से की गई। इसके अतिरिक्त मलिक दुनीचन्द जी डाइरेक्टर आफ रेविन्यू ईराक निवासी के ६८०) की लागत से दो कमरे, जोकि अध्यापिकागृह के साथ ही जुड़े हैं, विशेष रूप





कन्या गुरुकुल आश्रम का साधारण दृश्य।



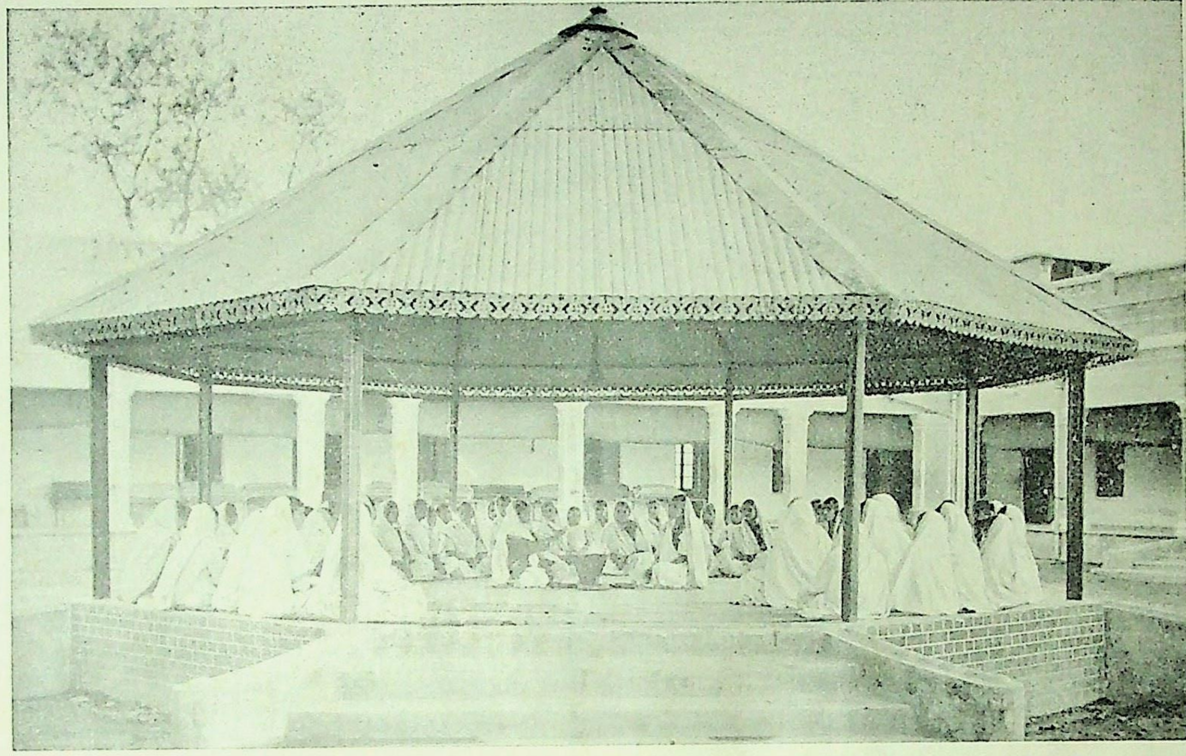
से अतिथिशाला के प्रयोग में समय २ पर लाये जाते रहे हैं। किन्तु इतने पर भी स्थानाभाव का प्रश्न सदैव जटिल बना रहा करता था। इस अभाव की पूर्ति के लिये गत वर्ष पुरानी अतिथिशाला के समीप ही एक और अतिथिशाला १४′ × १६′ के चार कमरों की स्नानालय, भोजनालय, वराण्डे सहित २५००) में तैयार कराई गई। इस प्रकार कठिनाई की पूर्ति की गई, किन्तु समय २ पर अब भी स्थानाभाव के कारण अतिथियों के लिये टीन के छप्पर डलवाने पड़ते हैं।

(७) **यज्ञशाला**—पुराने आश्रम के आंगन में एक छोटी सी, किन्तु सुन्दर यज्ञशाला बनाई हुई है जिसका समस्त लोहे का सामान मय उसकी फिटिंग के लगभग ६५०) की लागत से अम्बाला निवासी श्रीमान् डिप्टी दीवानचन्द जी ने प्रदान किया और उनके कनिष्ठ भ्राता रा० सा० लाला अमृतराय जी रिटायर्ड इञ्जीनियर की देख रेख में बनाई गई। ऊपर के फर्श के संगमरमर के लिये ५००) श्रीमान् ला० गण्डूशाह जी पट्टीमण्डी लाहौर तथा चबूतरे के लिये ४००) श्रीमान् ला० बिहारीलाल जी पालामल भण्डारी वेलगांव निवासी ने प्रदान किये हैं। एक और यज्ञशाला के लिये लाहौर निवासी श्रीमान् ला० रामलाल जी औलख की १०००) दान की प्रतिज्ञा है जिस में से २५०) प्राप्त भी हो चुके हैं। इस धन की प्राप्ति पर इसी प्रकार की एक और यज्ञशाला नवीन आश्रम के प्राङ्गण में बनाई जावेगी। इस प्रकार इसके अभाव की पूर्ति भी हो सकेगी।

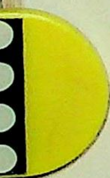
(८) **लाण्डरी**—श्री० रायसाहब फकीरचन्द जी जाली स्टेट-इञ्जीनियर सिक्किम के दान से एक लाण्डरी बनाई गई है। इसके अन्दर एक छोटा सा तालाब भी है जिसमें नहर का पानी ले लिया जाता है। यह कपड़े धोने के लिये तय्यार की गई है, फिलहाल स्नानगृह के रूपमें प्रयोगकी जाती है।

(९) **गौशाला**—कुछ एक दानियों की ओर से दी हुईं कुछ गौओं के प्राप्त होने पर एक छोटी सी गौशाला का निर्माण भी किया गया है। श्रीमती आचार्या जी की विशेष अपिल पर ६५०) की लागत से थोड़ा २ इकट्ठा किये गये दान से एक गोशाला भवन बनाया गया है, जिस में २५ गायें १० बच्चे, १ भैंस तथा कटड़ा रहते हैं और बाहर के दूधके साथ २ नित्य ८-१० सेर दूध अपनी गोशाला से भी प्राप्त हो जाया करता है। यदि देश के महान् दानियों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो सके तो एक सुन्दर गौशाला का निर्माण किया जा सकता है, जिस में गार्हस्थ्य जीवन के एक अत्यावश्यक अङ्ग गोपालन की शिक्षा भी कन्याओं को दी जा सके।

(१०) **विद्यालय**—कोठी नं० ६४ में विद्यालय लगाया जाता है, जो सम्वत् १९९२ में क्रय की गई थी। स्थान की तंगी होने से उसके साथ साथ १००′ × २०′ का टीनशेड भी लगभग ११००) की लागत का बनाया गया है, परन्तु इस से भी विद्यालय की कमी की पूर्ति नहीं हो सकी। गर्मी के मौसम में शेड इतने तप जाते हैं कि उन में बैठ कर पढ़ाई कर सकना कठिन है। विद्यालय की कोठी में स्थान की बड़ी न्यूनता है और साथ ही उसमें इतना अंधेरा रहता है कि पढ़ाने वाली अध्यापिकाओं तथा ब्रह्मचारिणियों के स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। इस प्रश्न को हल करने के लिये श्री आचार्य रामदेव जी की इच्छा थी कि वे स्वस्थ हो जावें तो इस कष्ट को निवारण करने के लिये शीघ्र धन एकत्रित कर दें; और इसी कारण वे रुग्णावस्था ही में धन एकत्रित करने दिल्ली चले गये और श्रीमान् सेठ श्रीराम जी दिल्ली क्लाथ मिल से २०००) का वचन लेकर ५००) प्राप्त भी किये और विद्यालय का इस्टीमेट भी रायसाहब अमृतराय जी रिटायर्ड इञ्जीनियर से ५२ हज़ार रुपये का अपने सामने ही तयार कराया; और इस कमी की पूर्ति के लिये उन्हें रोगी-शय्या पर भी चिन्ता लगी रहती थी। भगवान की लीला विचित्र है कि यह उनकी



यज्ञशाला में बैठकर ब्रह्मचारिणियां सन्ध्या-हवन कर रही हैं।



हार्दिक इच्छा पूरी न हो सकी और वे आर्यजनता से वियोग करके कन्यागुरुकुल को अपार शोकसागर में छोड़ कर ता० ९ दिसम्बर की प्रातः स्वर्गधाम को पधार गये। विद्या सभा ने जो इस संस्था की स्वामीनी सभा है प्रस्ताव सं० ४ तिथि २-९-९६ द्वारा निश्चय किया है कि विद्यालय भवन का निर्माण स्वर्गीय पूज्य आचार्य रामदेव जी की पुण्य स्मृति में ही उनके स्मारक रूप में बनाया जाय। इसके लिये आर्य प्रतिनिधि सभा ने दो लाख की अपील प्रकाशित की है, जिस में से प्रथम एक लाख कन्यागुरुकुल में शाला निर्माण तथा गद्दी स्थापित करने में लगे और दूसरा लाख वेदप्रचार विभाग को दिया जाय। आर्य जनता से पुर्ण आशा है कि वह अपने महानेता तपस्वी ब्राह्मण तथा निःस्वार्थ कार्यकर्ता स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी की अन्तिम इच्छा की पूर्ति के लिये तन-मन-धन से सहयोग देकर अपनी उदारता का परिचय अवश्य देगी। श्री स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी ने विद्यालय भवन की आधार शिला इस वर्ष के महोत्सव पर अपनी ज़िन्दगी में ही श्री कुंवर रणञ्जयसिंह जी अमेठी राज्य (अवध) के कर कमलों से अपने स्वर्गवास होने से २७ दिन पूर्व ही रखा दी थी।

हमारी आवश्यकता

संस्था की स्वामिनी सभा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तत्परता और विशेषतः गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी के अदम्य उत्साह एवं अहर्निश परिश्रम से कन्यागुरुकुल की भवन-सम्पत्ति लगभग १ लाख की है। किन्तु अभी भी नितान्त आवश्यक कामों के लिये ६४ हजार की और आवश्यकता है, जिसमें स्नानगृह, विद्यालय भवन, तथा भोजनशाला हमारी अत्यान्तावश्यक आवश्यकतायें हैं। भारतवर्ष धर्मपरायण देश है, अतएव यहां ऐसे दानियों की कमी नहीं है, आवश्यकता केवल दानियों का ध्यान आकर्षित करने की है। मनु महाराज के अनुसार "सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते" अर्थात् विद्या दान ही सब दानोंमें श्रेष्ठ एवं उत्तम दान है। आशा है स्त्रीशिक्षा के प्रेमी तथा पक्षपाती दानी महानुभाव कन्यागुरुकुल की उपयोगिता एवं सामाजिक सुधार-सेवा का विचार कर इस अभाव की पूर्तिमें विलम्ब न करेंगे।

गुरुकुल का प्रबन्ध

कन्यागुरुकुल का समस्त प्रबन्ध श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा (पंजाब तथा बिलोचिस्तान) लाहौर के आधीन है। बजट, मन्दिर निर्माण तथा अन्य आवश्यक बातों के लिये प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित विद्या सभा की स्वीकृति लेनी होती है। सम्वत् १९९२ से गुरुकुलों का प्रबन्ध अन्तरंग सभा के आधीन न रखकर विद्या सभा बनाकर उसके आधीन कर दिया है। अब उसी विद्या सभा की देख रेख में तथा उसके द्वारा निर्वाचित निम्न सज्जनों तथा देवियों के हाथ में है:—

(१) श्रीमान् आचार्य रामदेव जी मुख्याधिष्ठाता ९ दिसम्बर १९३९ ई० तक रहे। उनके स्वर्गवास हो जाने पर विद्यासभा ने प्रस्ताव सं० ७ तिथि २-९-९६ के अनुसार श्री० पं० विश्वम्भरनाथ जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा को कन्यागुरुकुल का अध्यक्ष चुना। तत्पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर विद्या सभा ने प्रस्ताव सं० २ तिथि २१-१२-९६ द्वारा ८ सदस्यों की प्रबन्धकर्त्री सभा बना दी है जिसमें

(१) श्री रायबहादुर दीवान बद्रीदास जी प्रधान सभा,
(२) श्रीयुत म० कृष्णजी बी० ए०, उपप्रधान सभा,
(३) श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी बी० ए०, एल० एल० बी०, उपप्रधान सभा
(४) श्रीमान् ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार न्यू दिल्ली,
(५) श्री ला० देशबन्धु जी गुप्त एम० एल० ए०,
(६) श्रीमान् ला० अमृतराय जी रिटायर्ड इञ्जिनीयर अम्बाला,
(७) स्वामी अभयदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, तथा
(८) श्रीमती आचार्या विद्यावती जी सेठ बी० ए० हैं।

इस प्रबन्धकर्त्री सभा को कन्यागुरुकुल विषयक सभी बातों का निर्णय करने का पूर्ण अधिकार है।

परन्तु, श्री आचार्य रामदेव जी के स्वर्गवास हो जाने से कन्यागुरुकुल के प्रबन्ध में महान् क्षति पहुंची, जिसकी पूर्ति होना कठिन है।

स्व० आचार्य रामदेव जी

जन्म ३१ जुलाई १८८१ ई० : : मृत्यु ९ दिसम्बर १९३९ ई०

'आचार्य रामदेव जी के निधन से आर्य जगत् में जो स्थान रिक्त हुआ है, उसकी पूर्ति होना कठिन है' ये शब्द एक आर्यसामाजिक नेता ने आचार्य जी के निधन पर कहे। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की मृत्यु के बाद आर्य जगत् में सर्वमान्य स्थान आचार्य जी को ही प्राप्त हुआ। आर्यसामाजिक जगत् में आचार्य जी ने अपनी योग्यता से ही स्थान प्राप्त किया था। प्रारम्भ में स्वामी श्रद्धानन्द जी आपको एक साधारण अध्यापक के रूप में ही गुरुकुल कांगड़ी में ले आये थे। परन्तु आचार्य जी ने जिस लगन और अनथक परिश्रम और योग्यता से कार्य किया उसीसे वे गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य, मुख्याधिष्ठाता और बाद में कुलपति के पद पर आसीन हुये। काम करने की आपमें ऐसी धुन थी कि आप सर्दी-गर्मी, रात-दिन कुछ भी नहीं गिनते थे। आर्यसमाजों के उत्सवों पर जितने अधिक व्याख्यान आचार्य जी ने दिये उतने शायद ही अन्य कोई व्याख्याता दे पाया होगा। उच्चशिक्षा-प्राप्त जनता में ऋषि दयानन्द के सन्देश को जिस योग्यता के साथ आचार्य जी पहुँचा गये हैं वह उनकी अपनी ही विशेषता थी। आर्यजगत् में जो व्याख्यान-शैली आज प्रचलित है उसके जन्मदाता आचार्य जी थे ही। आर्य समाज में जितनी प्रवृत्तियां आज चलती हैं चाहे वे सामाजिक सुधार सम्बन्धी हों अथवा शिक्षा सम्बन्धी, अथवा प्रचार सम्बन्धी, सब के निर्माण में आचार्य जी का प्रमुख भाग है। अमर-शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी जिस अवस्था में आर्यसमाज और उसकी विविध संस्थायें आचार्य जी के सुपुर्द कर गये थे, उनको उन्नत और विकसित अवस्था में ही अपनी मृत्यु के समय आचार्य जी आर्यजनता के सुपुर्द कर गये हैं। अब आर्यसमाज का यह कर्तव्य है कि उनके कार्य को अग्रगामी बनावे।

यद्यपि आचार्य जी अथ से इति तक आर्यसमाजी थे, आर्यसमाज के ही लिये जिये और उसी के लिये मरे, परन्तु उनकी प्रतिष्ठा और ख्याति भारतव्यापी थी। भारतवर्ष का इतिहास लिख कर और अन्य ऐतिहासिक खोज पूर्ण लेख और पुस्तकें प्रकाशित करके आपने अन्तःराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी। 'वैदिक मैगज़ीन' के सम्पादन काल

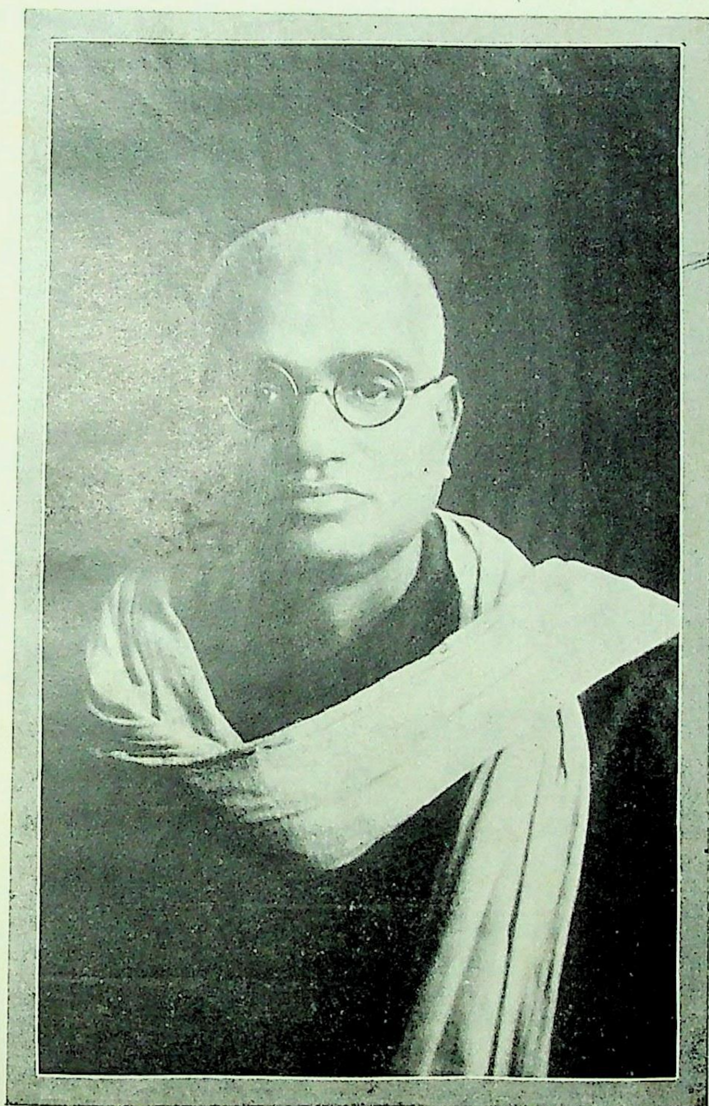
में आचार्य जी ने अंग्रेजी पठित जनता तक आर्यसमाज के विचारों को जिस योग्यता से रक्खा वह अपनी मिसाल आप है। उन दिनों देश और विदेश के बड़े २ नेता और लेखक "वैदिक मैगजीन" के लिये लेख लिखने में गौरव समझते थे।

पिछले सत्याग्रह संग्राम में पूज्य गांधी जी के आदेश पर आप पंजाब के प्रान्तीय डिक्टेटर बन कर कारागर की यातना भोग चुके थे। आर्यसमाज ने हैदराबाद में जो धर्म-युद्ध चलाया और जो अन्त में शान के साथ समाप्त हुआ उस में आचार्य जी रोगी होने के कारण सम्मिलित न हो सके। आचार्य जी तब अर्धाङ्ग रोग से पीड़ित होकर मृत्यु-शय्या पर पड़े २ भी सत्याग्रह की सफलता के लिये चिन्तत थे।

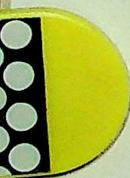
आचार्य जी की सेवाएं यद्यपि सभी क्षेत्रों में हैं, तथापि जीवन के अन्तिम भाग में उनकी सेवाओं का केन्द्र कन्यागुरुकुल देहरादून ही था। गुरुकुल कांगड़ी को अपने पैरों पर खड़ा कर के आप बरसों से कन्यागुरुकुल को उन्नत करने और उसे देश की सर्वमान्य कन्या शिक्षण संस्था बनाने में लग गये। संस्था के लिये घर २ पैसा मांगने में आप ने दिन रात और सर्दी गर्मी तथा अपने अन्य आराम का कुछ भी ध्यान न किया। उन्हीं की कृपा से आज कन्यागुरुकुल देहरादून को अखिल भारतीय रूप मिला है कन्यागुरुकुल की चिन्ता में ही उनके प्राण गये।

आचार्य जी की महान् सेवाओं के अनुरूप कन्यागुरुकुल को, जो कि उनका सच्चा समारक है, महान् रूप देना और संस्था की आचार्या विद्यावती जी को आर्थिक दृष्टि से निश्चिन्त करना समस्त आर्य समाजियों का और देशके अन्य राष्ट्रिय, धार्मिक शिक्षा प्रेमी नर-नारी का परम कर्तव्य है।

आचार्य रामदेव जी के स्वर्गवास पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (सिन्ध व बिलोचिस्तान) गुरुदत्त भवन लाहौर के प्रधान रायबहादुर दीवान बद्रीदास जो तथा मंत्री श्री पं० भीमसेन जी विद्यालंकार की ओर से संयुक्त रूप में आचार्य रामदेव-स्मारक की अपील' समाचार पत्रों किंवा पुस्तिका रूप में प्रकाशित हुई थी, इस प्रकार है:—



स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी



आचार्य रामदेव-स्मारक की अपील

माननीय नेताओं के उद्गार

परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कि आचार्य रामदेव जी आधि-व्याधियों से मुक्त हुए हैं। उनकी मृत्यु पर शोक नहीं करना चाहिए। वह पुण्यात्मा थे। उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। आपको धैर्य के साथ कन्या-गुरुकुल का बोझ अकेले उठाना चाहिए।

— विश्वबन्धु महात्मा गांधी जी

आचार्य रामदेव जी की मृत्यु से आर्यसमाज का स्तम्भ टूट गया। आचार्य रामदेव जी लगन वाले त्यागी कार्यकर्ता थे। उनकी स्मृति चिरकाल तक हमारे हृदयों में रहेगी। उनके त्यागमय जीवन का उदाहरण गुरुकुल की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। मैं निजू तौर पर और आर्यसमाज-जगत की ओर से इस अवसर पर उनके सम्बन्धियों के साथ हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता हूं।

—श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त, प्रधान
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा

मैं खुद बहुत बीमार था और उसी अवस्था में एक दिन किसी ने समाचार-पत्रों से खबर सुनाई कि आचार्य श्री रामदेव जी का स्वर्गवास हो गया। सुनकर चित्त बहुत दुःखी हुआ और बहुत सी स्मृतियां जाग उठीं। आचार्य जी की एकनिष्ठा, सेवा-भाव और त्याग न केवल उन संस्थाओं के लिए ही, जिनके साथ उनका सम्बन्ध था, पर बहुतेरे देश के निवासियों के लिए पथप्रदर्शक बने रहेंगे। अभी काम बहुत पड़ा हुआ है। उनके लिये कितनी संस्थायें और हृदय आज दुःख के समुद्र में गोते लगा रहे हैं। पर इस में ईश्वर की जो योजना होती है वही होकर रहती है। आप सब धीरज से काम लें और जो काम आचार्य जी छोड़ गये हैं उनको पूरा करने में लगे रहें।

—राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी

आचार्य रामदेव जी—स्मारक की अपील

आचार्य रामदेव जी की शोकजनक असामयिक मृत्यु ने आर्य-जाति को एक विद्वान् त्यागी आशावादी नेता से वंचित कर दिया है। आचार्य रामदेव जी ने अपना सर्वस्व वैदिक-धर्म और आर्य संस्कृति के प्रचार के लिये बलिदान किया हुआ था। दो साल हुए धर्म-प्रचार और आर्य-जाति की सेवा करते हुए ही, वह कार्य की अत्यधिकता तथा सर्दी के कारण अर्धांग की बीमारी से पीड़ित हुए। इस रुग्णावस्था में भी, मृत्यु के अन्तिम दिन तक वह लोक-सेवा के काम में लगे रहे। इस बीमारी ने उनकी वाणी और लेखनी को कुन्द कर दिया था, परन्तु वह फिर भी आर्यधर्म की सेवा में लगे हुए हार न मानते थे, और अन्तिम समय तक कन्या-गुरुकुल की सेवा में, उसे आर्थिक चिन्ता से मुक्त करने की धुन में लगे रहे। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व बीमारी की हालत में ही, वह दिल्ली कन्या-गुरुकुल के लिये धन संग्रह करने गये। उन्हों ने लोक-सेवा के लिये अपने सब सुखों को कुर्बान कर दिया। ऐसे त्यागी, धुन के धनी की मृत्यु से आर्यसमाज की जो क्षति हुई वह पूरी नहीं हो सकती।

स्वामी श्रद्धानन्द के बाद गुरुकुल-कांगड़ी को स्थिर पाये पर खड़ा करने में, स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम इच्छा को पूर्ण करने के लिये आचार्य रामदेव जी ने जो सेवा की, उसे कौन भूल सकता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय की जुबिली को कामयाब बनाकर स्वामी श्रद्धानन्द के कुल-सेवा सम्बन्धी संदेश को पूरा करने का अनुकरणीय उदाहरण रखा। गुरुकुल कांगड़ी की नई इमारतें, आचार्य रामदेव जी के परिश्रम और लगन की जाती-जागती निशानियां हैं।

प्रश्न यह है कि आज आचार्य रामदेव के अधूरे काम को कौन पूरा करेगा? उन्हें दिन-रात एक ही धुन थी। आर्यसमाज की धुन में, ऋषि दयानन्द के आदर्शवाद को संसार के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिये वह अपनी वाणी और लेखनी का चमत्कारिक प्रयोग करते थे। वह समझते थे कि जब तक भारत की महिलाओं में आर्य-संस्कृति के आदर्श उनके जीवन में नहीं उतरते, तब तक आर्य-जाति का पुनरुत्थान नहीं हो सकता। इसी लिए अन्तिम दिनों वह अपनी अधिकांश शक्ति

कन्या-गुरुकुल की सेवा में लगा रहे थे। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व आचार्य रामदेव जी ने कन्या-गुरुकुल के लिये निम्न लिखित अन्तिम अपील की थी—

"कन्या-गुरुकुल देहरादून उत्तर-भारत की एक-मात्र राष्ट्रिय कन्या शिक्षण संस्था है, जिसमें आर्यबालाओं को प्राचीन वेदशास्त्र, उपनिषद, स्मृति, तथा गीता आदि के साथ-साथ धर्म-शिक्षा, गृहचिकित्सा, गृह-विज्ञान, शिल्पकला, वाद्य, भारतीय तथा यूरोपीय इतिहास, गणित, मनोविज्ञान, आर्यसिद्धान्त आदि तथा अर्थशास्त्र आदि अर्वाचीन विषयों की शिक्षा, राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती है। प्रत्येक कन्या के साथ बिना किसी वर्णभेद, तथा धनी-निर्धन के भेदभाव के बिना, खान-पान तथा रहन-सहन में समान व्यवहार किया जाता है। कन्यायें एक साथ खाने-पीने और एक ही स्थिति में रहने से बड़े सौहार्द एवं प्रेमपूर्वक भाव से रहती हैं। यह संस्था सर्वथा प्राचीन प्रणाली का निवासाश्रम तथा शिक्षणालय है। शिक्षण तथा आन्तरिक प्रबन्ध सर्वथा देवियों के हाथ में है। गुरुकुल की आचार्या कुमारी विद्यावती जी सेठ एक बड़े लब्धप्रतिष्ठित खान-दान की युक्तप्रान्त की, सर्वप्रथम ग्रेजुएट महिला हैं, बालब्रह्मचारिणी हैं और अपना सारा जीवन स्त्री-शिक्षोन्नति में लगाया हुआ है। उनकी देख-रेख में संस्था दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की कर रही है। शिक्षा विभाग में २ बाहर की ग्रेजुएट, ५ गुरुकुल की स्नातिकायें, ३ संस्कृत की ग्रेजुएट तथा ६ अन्य अध्यापिकायें कार्य करती हैं।

वर्तमान समय में २४९ कन्यायें पंजाब, संयुक्तप्रान्त, मध्यप्रदेश, बिहार, बम्बई, बंगाल, मदरास, ब्रह्मा के अतिरिक्त फीजी, अफ्रीका, तथा परशिया जैसे सुदूर देशों की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। पढ़ाई ११ वर्ष की है। १६ या १८ वर्ष की कन्या गुरुकुल की स्नातिका (ग्रेजुएट) बन जाती हैं, जो भारतीय सभ्यता से ओत-प्रोत तथा आर्यसंस्कृति के वातावरण में पली होने के कारण प्राचीन आर्यमहिला सीता, सावित्री, मैत्रेयी आदि का अनुसरण करती हुई उच्च आदर्शमय जीवन

बिताती है, और जिसकी योग्यता अन्य विश्वविद्यालयों की बराबरी में ज्यादा ही होती है, न कि कम। यहां की स्नातिकाओं की योग्यता संस्कृत साहित्य तथा हिन्दी में पञ्जाब की शास्त्री तथा प्रभाकर के बराबर है। हिन्दुस्थान, एशिया तथा यूरोप का इतिहास तथा मनोविज्ञान बाहर की यूनिवर्सिटीकी बी० ए० के बराबर, तथा अङ्गरेज़ी मैट्रिक के बराबर होती है। इतने कम समय में उपरोक्त इतनी ज्यादह पढ़ाई कैसे सम्भव हो सकती है, इस बात की साक्षी कन्या-गुरुकुल में पधारे भारतके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध शिक्षाविज्ञों की निम्न सम्मतियां बतावेंगी—

"ऊंची कक्षाओं की कन्याओं से उनके पाठ्य विषयों पर जो प्रश्न किये गये और कन्याओं ने उनके जिस सुन्दरता से उत्तर दिये, उससे प्रकट हुआ कि अपनी भाषा द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के कारण गहन विषयों में भी वे अपनी बुद्धि की स्फूर्ति से प्रवेश कर सकती हैं और उन पर स्वतन्त्र विचार कर सकती हैं।"

—[ह०] बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन, स्पीकर, युक्तप्रान्तीय असेम्बली।

"मैंने तथा आचार्य रामदेव जी ने धर्म, इतिहास पर कई प्रश्न कन्याओं से किये और उन्होंने सब के ठीक उत्तर दिये। एक कन्या ने दो वेदमन्त्रों का अर्थ ठीक-ठीक सुनाया। भिन्न-भिन्न श्रेणियों को देखा। कन्योओ से शुद्ध वेदमन्त्रों का उच्चारण सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। चूंकि कन्या-गुरुकुल में विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा नहीं दी जाती, इस लिये कन्याओं को ज्ञान-उपलब्धि में अन्य शिक्षणालयों की कन्याओं से कम समय खर्च करना पड़ता है।"

—[ह०] महात्मा हंसराज, लाहौर।

"मुझे तमाम श्रेणियों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जबकि वे पढ़ाई कर रही थीं। संस्कृत का पाठ्य-क्रम सर्वथा मौलिक है। हिन्दी वैज्ञानिक ढंग पर, और इतिहास—सच्चा इतिहास— नहीं-नहीं हमारे पूर्वजों के उत्कर्ष का वास्तविक इतिहास सविस्तर पढ़ाया जाता है। पाठ्य-क्रम अनुकरणीय है। मैं सञ्चालकों के इस अनुपमेय कार्य की सराहना करता हूँ तथा धन्यवाद देता हूं।"

—[ह०] चान्दूलाल बी पटेल, शिक्षासचिव, गौंडाल स्टेट।

"संस्था में लड़कियां प्रसन्न हैं। अध्यापिकायें कुल में कुटुम्ब के समान रहती हैं। मुझे आश्चर्य है कि इतने अल्प समय में विद्यार्थिनियों में इतना ज्ञान कैसे भर दिया जाता है। यहां की वातावरण, रहन सहन की सादगी, लड़कियां की निर्भयता अभिनन्दनीय है। संस्था में मैंने साम्प्रदायिकता से राष्ट्रियता अधिक पाई।"

—[ह०] काका कालेलकर वर्धा।

"विद्यार्थिनियों के आश्रम जीवन की छाप मेरे मन पर बहुत अच्छी पड़ी। इनका जीवन बहुत सादा और राष्ट्रिय है जो देश के अन्य कन्या-विद्यालयों के लिये अनुकरणीय है। प्रायः सब ही कन्याएं प्रसन्न, स्वच्छ और खद्दर-धारिणी दिखाई दीं। अन्य अंग्रेजी कन्यापाठशालाओं के से दोष इनके दैनिक व्यवहारों में दिखाई नहीं पड़ते। हिन्दी-साहित्य के अध्ययन की ओर काफी ध्यान दिया जाता है। शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा हिन्दी होने से महाविद्यालय की कन्याओं का विषय-ज्ञान तथा प्रवेश अन्य अंग्रेजी स्कूल कालिजों की विद्यार्थिनियों से अच्छा है। इनका ऐतिहासिक ज्ञान तथा सामयिक राष्ट्रिय ज्ञातव्य बातों का ज्ञान देख कर मुझ को आश्चर्य हुआ। इस विशेषता के लिये यह संस्था आचार्य रामदेव जी की ऋणी है।"

—[ह०] संगमलाल अग्रवाल, प्रस्तोता, महाविद्यालय, प्रयाग।

"मुझे कन्या-गुरुकुल देहरादून देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। कन्याओं की देख-रेख तथा शिक्षा-दीक्षा बड़ी उत्तमता से की जाती है। संस्था जिस प्रकार कन्याओं की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध कर रही है उसके लिये वह प्रशंसा के योग्य है।"

—[ह०] विजयलक्ष्मी पंडित, मन्त्रिणी स्वास्थ्य विभाग, यू० पी०।

"कन्याओं का साधारण ज्ञान प्रशंसनीय है। उन्होंने वर्तमान अनेक राजनैतिक प्रश्नों के उत्तर संतोषजनक दिये। कन्याओं के भाषण हिन्दी और संस्कृत में सुने; उनके व्यायाम, लेजिम आदि भी देखे। प्रत्येक कृत्य नियमित और प्रभावोत्पादक है। भोजन, रहन सहन का भी उत्तम प्रबन्ध है।"

—[ह०] नारायण स्वामी जी महाराज।

"१५ वर्ष से यह गुरुकुल यहां स्थापित है। २५० के लगभग दूर-दूर देशों से, कोई-कोई दक्षिण अफ्रीका तथा फीजी से भी,

आकर यहां अध्ययन करती हैं। आचार्या महोदया तथा अध्यापिकायें सुयोग्य तथा परिश्रमी हैं। लड़कियों की तन्दुरुस्ती अच्छी है। स्वच्छता तथा स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। सब कन्यायें आश्रम में रहती हैं। वातावरण वैदिक है। पूर्व में स्त्रियां किस प्रकार शिक्षा पाती थीं और भविष्य में कैसे गृह-प्रबन्ध में तथा संसार-यात्रा में देशसेवा-पारंगत होंगी, इस बात पर ध्यान दिया जाता है। व्यायाम, संगीत के साथ जिस रोचकता से किया जाता है वह सराहनीय है। यह संस्था स्वावलम्बी और आत्मपोषी है, सरकार से कोई सहायता नहीं लेती। कन्याओं की दिमागी उन्नति देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। ऐसी संस्थाओं की भारत को आवश्यकता है।"

—[ह०] बद्रीनाथ पाण्डे, एम० एल० ए० (केन्द्रीय)।

"अपनी देहरादून-यात्रा में मुझे कन्या-गुरुकुल देखने का भी सुअवसर मिला। मुझे उसे देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। किन्तु समय की न्यूनता से मैं ज्यादा समय न दे सका, जो कि मुझे देना था। प्रबन्ध बड़ा उत्तम है, उसके पूर्ण होने में संस्था ने कोई बात छोड़ नहीं रखी है। यह संस्था प्राचीन गुरुकुलों की पद्धति पर है और कन्यायें जो कई वर्ष तक अपने अभिभावकों से पृथक् रहती हैं मुझे बड़ी प्रसन्न और स्वस्थ दिखाई दीं। उनकी देख-रेख तथा पालन-पोषण बड़े प्रेम और सावधानी से किया जाता है। मैं उनका आश्रम-जीवन तथा योग्यता देखकर बड़ा प्रभावित हुआ।"

— [ह०] के० एन० काटजू, मिनिस्टर न्याय तथा प्रबन्ध, यू० पी०।

"मैंने ११ जून को कन्या गुरुकुल का निरीक्षण किया। यहां की व्यवस्था देखकर तबीयत बड़ी खुश हुई। वातावरण शुद्ध राष्ट्रिय पाया। यहां कन्याओं से १५) मासिक लिया जाता है। इतने थोड़े व्यय में शिक्षा के अतिरिक्त उनके भोजन, वस्त्र, पुस्तकों आदि का भी प्रबन्ध किया जाता है। कन्याओं को उत्तम स्वास्थ्यवर्द्धक पौष्टिक भोजन दिया जाता है। स्थान की सफाई पर काफी ध्यान दिया जाता है। उनके खेल का भी प्रबन्ध किया जाता है। शिक्षा की अच्छी व्यवस्था है। कन्याओं की योग्यता की मैंने साधारण रीति से जांच की और मुझे सन्तोष हुआ। मध्यम श्रेणी के लोगों के लिये एक, बड़ी उत्तम संस्था है। ऐसी संस्थाओं की भारत को बहुत आवश्यकता है। कन्याओं की शिक्षा पर आजकल ज्यादा ध्यान दिया जाता है। आशा

है जो महानुभाव कन्याओं के लिये शिक्षा-संस्था खोलने का विचार करें वे एक बार इस संस्था का अवश्य निरीक्षण करेंगे।"

—[ह०] आचार्य नरेन्द्रदेव।

उपर्युक्त निरीक्षकों की रिपोर्टों से प्रत्येक सज्जन सहज ही अनुमान लगा सकता है कि संस्था लगातार पिछले १५ वर्षों से कन्याओं की शिक्षा का कैसा उत्तम प्रबन्ध कर रही है। २५० से भी अधिक कन्याओं की रेज़ीडेन्शियल (निवासाश्रम) संस्था भारत-भर में दूसरी नहीं है। इतनी अधिक कन्याओं की शिक्षा के लिये अतिरिक्त देख-रेख, पालन-पोषण का उत्तम प्रबन्ध करना कितनी बड़ी जुम्मेवारी का काम है, यह प्रत्येक महानुभाव स्वयं ही अनुभव कर सकते हैं।

संस्था जहां शिक्षा में, प्रबन्ध में तथा कन्याओं की संख्या में वृद्धि तथा उन्नति कर रही है, वहां उसकी आर्थिक अवस्था सन्तोष-जनक नहीं है। संस्था ने आश्रम आदि पर अब तक लगभग एक लाख रुपया व्यय कर दिया है, किन्तु अब तक भी बड़ी तङ्गी है। एक नया आश्रम बन रहा है, जिसके लिये २०,०००) की आवश्यकता है। साथ ही हस्पताल के लिये ५,०००), भोजनशाला के लिये ४,०००) तथा धर्मशाला के लिये २,०००) कुल ३१,०००) बिल्डिंग्स के लिये तथा २००००) की चालू खर्च के लिये हमें नितान्त आवश्यकता है। आशा है, आर्य-संस्कृति के पक्षपोषक प्रत्येक आर्य भाई-बहिन बालिकाओं की इस आवश्यक और उपयोगी संस्था की अपनी शक्ति-भर धन से सहायता करेंगे।"

आचार्य रामदेव जी ने इस बात को अनुभव किया था कि यदि हम आर्यसमाज का—ऋषि का संदेश देश देशान्तर में फैलाना चाहते हैं तो हमें वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिये ऐसे धर्म-प्रचार-दीक्षित व्यक्तियों का समुदाय इकट्ठा करना चाहिये, जिन्हें दिन-रात चौबीसों घन्टे वैदिक धर्म की ही धुन हो। इसी उद्देश्य से उन्हों ने सभा को प्रेरणा कर २९ कार्त्तिक १९८८ में दयानन्द-सेवा-सदन की स्थापना की थी। सभा का वेद-प्रचार तभी स्थिर पाये पर खड़ा हो सकता है यदि दयानन्द-सेवा-सदन के द्वारा विद्वान धर्म-प्रचारक लाये जाये। इसी धुन में १९३५ में आचार्य रामदेव जी ने सभा के वेद-प्रचार-विभाग को स्थिर करने के लिये वेद-प्रचार-निधिके बनाने पर विशेष बल दिया था।

आर्यसमाज का कोई ऐसा आन्दोलन नहीं, जिस पर आचार्य रामदेव जी के क्रियाशील जीवन की छाप न हो। उनकी स्मृति को

जागृत रखने के लिये छोटे-मोटे स्मारक बनाये जा सकते हैं। परन्तु यदि हम यथार्थ में उनका चिरस्थायी स्मारक बनाना चाहते हैं तो हमें उनके क्रियात्मक-जीवन के मुख्य कार्य कन्यागुरुकुल और दयानन्द-सेवा-सदन अथवा वेद-प्रचार के स्थिर कोष को उन्नत दशा में चलाने का निश्चय करना चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य-जनता से इन दो कामों के लिये दो लाख रु० की अपील की है। एक लाख रुपया कन्या-गुरुकुल के कार्य के संचालन के लिये व्यय किया जातगा। इसके द्वारा दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए कन्या-गुरुकुल के भवन बनाने तथा गत वर्षों की आर्थिक अवश्यकताओं को पूरा करने का यत्न किया जावेगा। और एक लाख द्वारा दयानन्द-सेवा-सदन व वेद-प्रचार का स्थिर कोष बनाकर उसके द्वारा योग्य विद्वान प्रचारकों द्वारा आर्य-संस्कृति का संदेश देश-देशान्तर में फैलाने का काम किया जायगा। यदि हम उनकी स्मृति को चिरस्थाई बनाना चाहते हैं और आचार्य रामदेव जी का सच्चा स्मारक बनाना चाहते हैं, तो हमें उनके चलाये हुये कामों को जारी रखना चाहिये। उनकी भांति वैदिक धर्म की सेवा के लिये अपने हृदयों में त्याग और धुन की भावना को जगाना चाहिये। आचार्य रामदेव जी ने अपने जीवन-काल में लाखों रूपये भिक्षा करके ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के मिशन लिये अर्पित किये। क्या आज हम उनकी स्मृति के लिये दो लाख की भिक्षा एकत्र नहीं कर सकेंगे ! जिस आशीर्वाद से आचार्य रामदेव जी अपनी लगन में कामयाब हुये, उसी आशावाद के सहारे हमें पूर्ण आशा है कि आर्य जनता इस अपील को पूरा करने में कोई बात उठा न रक्खेगी। सभा की ओर से पञ्जाब तथा देश के दूसरे भागों में भिक्षा-मण्डलियों के भेजने की योजना की जा रही है। परन्तु आर्य-जनता को इन डैपूटेशनों की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये, आर्यसमाज को स्थानीय "आचार्य रामदेव-स्मारक-समितियां" बनाकर धन-संग्रह का काम शुरु कर देना चाहिये। इस कार्य के लिये यदि कहीं प्रचार की विशेष आवश्यकता हो तो उसके लिये सभा-कार्यालय में पत्र लिख कर प्रबन्ध करा लेना चाहिये।

हमें उम्मीद है कि आर्य-जनता जाति-सेवा तथा धर्म-सेवा पर सर्वस्व न्योछावर करनेवाले आचार्य रामदेव जी का स्मारक बनाकर उनकी दिवंगत आत्मा के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रगट करने में हमें क्रियात्मक सहयोग देगी।

शिक्षा-प्रबन्ध

विद्यालय विभाग में शिक्षा का क्रम बहुत कुछ संशोधन के पश्चात् अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत तथा गुरुकुल की छपी पाठविधि के अनुसार ही चलता है।

महाविद्यालय तथा अधिकारी श्रेणी की पाठविधि निश्चित करने के लिये विगत चार वर्षों से विद्यासभा ने गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के शिक्षा पटल की साधारण देख रेख में एक पृथक् शिक्षा समिति बना दी है जोकि उपरोक्त श्रेणियों की पाठविधि निश्चित करती तथा उसमें आवश्यक संशोधन-परिवर्तन करती है। परीक्षा का समय नियत करने, उसकी व्यवस्था तथा प्रश्नपत्र बनवाने आदि का काम पूर्ववत् शिक्षा पटल ही करता है। इस समिति का संगठन विद्यासभा की बैठक तिथि ९-३-९२ के प्रस्ताव सं० ४ के अनुसार निम्न प्रकार है:—

(१)	कन्यागुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता	प्रधान
(२)	गुरुकुल विश्वविद्यालय के प्रस्तोता	मन्त्री
(३)	,, ,, कांगड़ी के आचार्य	सदस्य
(४)	कन्यागुरुकुल महाविद्यालय की आचार्या	,,
(५)	शिक्षापटल के २ प्रतिनिधि	,,
(६)	विद्यासभा के ३ प्रतिनिधि	,,
(७)	कन्यागुरुकुल की उपाध्यायायों की २ प्रतिनिधि	,,
(८)	,, स्नातिकाओं की १ प्रतिनिधि	,,

कन्यागुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्रीमान् आचार्य रामदेव जी की अस्वस्थता के कारण मुख्याधिष्ठाता का कार्य भी श्रीमती आचार्या विद्यावती जी सेठ को करना पड़ता था और उनके स्वर्गवास होजाने पर सारा भार आचार्या जी के ऊपर आन पड़ा है। प्रस्तोता के स्थान पर मन्त्रीपद का कार्य पं० धर्मदेव जी शास्त्री करते हैं। शिक्षा पटल के प्रतिनिधि इस वर्ष भी पूर्ववत् श्री प्रो० विश्वनाथ जी विद्यालंकार तथा श्री प्रो० नन्दलाल जी एम० ए०, एल० एल० बी० रहे। विद्यासभा

की ओर से श्रीमान् प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, श्रीमती चन्द्रवती जी लखनपाल एम० ए०, बी० टी० तथा श्रीमती चन्द्रप्रभा जी विद्यालंकृता रहीं। कन्यागुरुकुल की उपाध्यायाओं की ओर से श्रीमती पद्मिनीदेवी जी एम० ए० तथा श्रीमती सुशीलादेवी काव्यतीर्थ रहीं। और कन्या गुरुकुल की स्नातिकाओं की ओर से श्रीमती दमयन्तीदेवी जी विद्यालंकृता साहित्यरत्न सदस्या रहीं।

उपरोक्त समिति के आधीन दो उपसमितियां कन्यागुरुकुल की उपाध्यायायों की 'वेद शिक्षा उपसमिति' तथा 'आधुनिक शिक्षा उपसमिति' स्थापित है। यह समितियां नई पाठविधि को आरम्भ करने से पूर्व उस पर विचार-विनिमय कर अपनी सम्मति विचारार्थ शिक्षा-पटल-समिति में उपस्थित करती हैं, जिससे कन्यागुरुकुल की पाठविधि अधिक से अधिक उपयोगी और सर्वाङ्ग सुन्दर बन कर उसकी शिक्षा उन्नतिशील और लाभकारी सिद्ध हो सके। उन समितियों का संगठन निम्न प्रकार है :—

वेद शिक्षा-समिति

(१)	श्रीमती विद्यावती जी सेठ आचार्या	प्रधाना
(२)	श्री पं० धर्मदेव जी शास्त्री	मन्त्री
(३)	श्रीमती राधारानी जी प्रधानाधिष्ठात्री	सदस्या
(४)	श्रीमती सुशीलादेवी जी काव्यतीर्थ	,,
(५)	श्रीमती ओम्‌वती जी विशारदा बी० ए०	,,
(६)	श्री कु० कलावती जी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न	,,
(७)	,, ,, वेदवती जी ,, ,,	,,
(८)	,, ,, ब्रह्मवती जी ,, ,,	,,
(९)	श्रीमती दमयन्तीदेवी जी ,, ,,	,,
(१०)	श्री कु० शान्तादेवी जी शास्त्रिणी	,,

आधुनिक शिक्षा-उपसमिति

(१) श्रीमती आचार्या विद्यावती जी सेठ प्रधाना
(२) श्री पं० धर्मदेव जी शास्त्री मन्त्री
(३) श्रीमती राधारानी जी प्रधानाधिष्ठात्री सदस्या
(४) ,, ओम्वती जी विशारदा बी० ए० ,,
(५) ,, दमयन्तीदेवी जी विद्यालंकृता साहित्यरत्न ,,
(६) श्री कु० पद्मिनीदेवी जी एम० ए० ,,
(७) ,, आशितादास जी एम० ए० ,,
(८) ,, वेदवती जी विद्यालंकृता साहित्यरत्न ,,
(९) ,, ब्रह्मवती जी ,, ,, ,,
(१०) श्रीमती लेडी डाक्टर ,,

वार्षिक परीक्षायें

विद्यालय की षाण्मासिक तथा वार्षिक परीक्षायें प्रथम से सप्तम तक कन्यागुरुकुल की अध्यापिकाओं द्वारा ली जाती हैं। अधिकारी तथा महाविद्यालय की परीक्षायें कन्यागुरुकुल में ही शिक्षा पटल द्वारा नियंत्रित हुआ करती हैं। नियम यह है कि एक विषय के दो परीक्षक हों, एक सज्जन बाहर के ओर एक कन्यागुरुकुल की उपाध्यायायों में से। सम्वत् १९९६ में बाहर के निम्न महानुभाव परीक्षक थे:—

अधिकारी श्रेणी

(१) आर्यभाषा—श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी।
(२) गणित —श्री मास्टर यशपाल जी बी० ए०, बी० टी०, आर्य-हाईस्कूल लुध्याना।
(३) संस्कृत —श्री पं० चन्द्रकान्त जी वेदवाचस्पति आर्यन कालेज इटोला।
(४) व्याकरण—श्री पं० धर्मराज जी वेदालंकार।
(५) भूगोल —श्री ला० हरदयाल जी एम० ए०, एल० टी०, जलन्धर
(६) इतिहास—श्री पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालंकार गाजियाबाद।
(७) धर्मशिक्षा—श्री पं० धर्मदेव जी वेदवाचस्पति गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ।

नवम श्रेणी

(१) संस्कृत—श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति गुरुदत्तभवन लाहौर।

(२) इतिहास—श्री प्रो० रामलुभाया जी एम० ए०, दयानन्द कालेज मोगा।

(३) मनोविज्ञान—श्री प्रो० नन्दलाल जी एम० ए०, एल० एल० बी०, उपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी।

(४) आंगलभाषा—श्रीमती चन्द्रवतीजी लखनपाल एम०ए०, बी०टी०

(५) धर्मशिक्षा—श्री पं० धर्मदेव जी वेदवाचस्पति गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ।

दशम श्रेणी

(१) संस्कृत साहित्य—श्री प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०।

(२) आंगलभाषा—श्री प्रो० लालचन्द जी एम० ए०, गुरुकुल कांगड़ी।

(३) श्री पं० चन्द्रगुप्त जी वेदालंकार गाज़ियाबाद।

(४) गृहचिकित्सा -श्री डा० राधाकृष्ण जी B. Sc., M. B. B. S., गुरुकुल कांगड़ी।

(५) धर्मशिक्षा—श्री पं० धर्मदेव जी वेदवाचस्पति गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ।

एकादश श्रेणी

(१) संस्कृत साहित्य—श्री पं० चन्द्रकान्त जी वेदवाचस्पति।

(२) आर्यसिद्धान्त—श्री बा० गंगाप्रसाद जी एम० ए० टिहरी।

(३) आंगलभाषा—श्री ला० हरदयाल जी एम० ए०।

(४) इतिहास—श्री पं० वेदव्रत जी विद्यालंकार।

(५) धर्मशिक्षा—श्री प्रो० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति।

महाविद्यालय तथा अधिकारी का परीक्षा परिणाम

महाविद्यालय तथा अधिकारी परीक्षा में १९९६ में ३१ कन्याएं परीक्षा में बैठीं, जिन में से २९ उत्तीर्ण, १ कम्पार्टमेण्ट में, तथा १ अनुत्तीर्ण रहीं।

स्नातिका परीक्षा से ५ कन्याएं, और अधिकारी से २ कन्याएं उत्तीर्ण तथा १ कन्या अनुत्तीर्ण होकर अपने २ घर चलीं गईं। ८म की ९ कन्याएं नवम में, नवम की ११ कन्याएं दशम में और दशम की २ कन्यायें एकादश में, कुल २२ कन्यायें महाविद्यालय में और २४ कन्यायें अधिकारी की हैं, जिनकी संख्या ४६ है और जिनकी परीक्षायें अप्रैल १९४० के अन्त में हुईं।

सम्वत् १९९५ की परीक्षा का, जो वैशाख १९९६ में ली गई, परिणाम निम्न प्रकार है:—

श्रेणी	उपस्थित	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	पुनः परीक्षा	सर्वयोग	सूचना
११श	५	५	...	...	५	
१०म	२	२	...	...	२	
९म	१२	११	...	१	१२	
८म	१२	११	१	...	१२	
यो..	३१	२९	१	१	३१	

अधिकारी की ११ उत्तीर्ण कन्याओं में १ कन्या पिछले वर्ष की भी सम्मिलित है जो पिछले वर्ष अस्वस्थता के कारण व्याकरण तथा संस्कृत साहित्य में परीक्षा नहीं दे सकी थी। नवम श्रेणी की एक कन्या पुनः परीक्षामें आई थी किन्तु वह अस्वस्थता के कारण पुनःपरीक्षा नहीं दे सकी, अब उसने नवम श्रेणी के सारे विषयों की परीक्षा दी है।

विद्यालय का परीक्षा–परिणाम सम्वत् १९९६

श्रेणी	उपस्थित	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	पुनः परीक्षा	सर्वयोग	सूचना
७म	२५	२५	...	...	२५	
षष्ठ	३७	३१	...	६	३७	
५म	३७	२७	४	६	३७	
४र्थ	३१	२९	२	...	३१	
३य	३४	३३	...	...	३४	
२य	२२	२२	...	...	२२	
१म	१४	१४	...	...	१४	
कच्ची	६	४	२	...	६	
योग	२०६	१८६	८	१२	२०६	

गत वर्ष की भांति विद्यालय की परीक्षा चैत्र में हुई जिसमें २०६ कन्यायें बैठी थीं। १८६ कन्यायें उत्तीर्ण, ८ अनुत्तीर्ण और १२ कन्यायें पुनःपरीक्षा में आईं, जिनकी परीक्षा पुनः लेली गई जिनमें केवल ३ कन्यायें अनुत्तीर्ण रहीं।

पदक तथा पारितोषक

कुछ एक दानी महानुभावों की कृपा से प्रतिवर्ष विभिन्न विषयों में सर्वप्रथम रहने वाली कन्याओं को पदक तथा पारितोषक दिये जाते हैं। यह पदक-वितीर्ण-समारोह उत्सव के अवसर पर प्रतिवर्ष किया जाता है। इस वर्ष के उत्सव में श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर जी पधारी थीं। उनकी अध्यक्षता में पदक-वितीर्ण-समारोह मनाया गया और निम्नप्रकार कन्याओं को पदक तथा पारितोषक दिये गयेः—

क्रम सं०	स्थिर पदक	किस निमित्त दिया	किस को मिला
(१)	श्री प्रो० लक्ष्मणस्वरूप जी एम० ए०, पी० एच० डी० लाहौर निवासी द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला पदक ४) का।	राजपूत इतिहास में ४थं श्रेणी में प्रथम रहने वाली कन्या।	ब्र० कमला (मसूरी)
(२)	श्री गुरुदत्त जी सेठी इञ्जीनियर जमशेदपुर की ओर से चन्द्र रजत स्थिर पदक ४) का।	अधिकारी श्रेणी में धर्मशिक्षा में सर्व प्रथम रहने वाली कन्या।	ब्र० वीरबाला (इस्लामनगर)
(३)	बाबू जगदीशराय जी वकील मानसा (सुपुत्र श्रीमान ला० रघुवरदयाल जी रिटायर्ड डिप्टी मजिस्ट्रेट पटियाला) से अपनी माता जी की स्मृति में 'मन्नीराम कटारी' स्थिर रजत पदक ४) का।	अधिकारी श्रेणी में सर्वोत्तम रहने वाली कन्या।	ब्र० सुषमा देहरादून
(४)	म० हरप्रसाद जी होनी रईस जगाधरी की ओर से अपनी पुत्रवधू की स्मृति में चन्द्रवती स्थिर रजत पदक ४) का।	स्नातिका परीक्षा में धर्मशिक्षा में सर्व प्रथम रहने वाली कन्या।	ब्र० अरुन्धती नवस्नातिका
(५)	श्री म० बद्रीप्रसाद जी रईस किसरोल जिला मुरादाबाद की ओर से अपनी पुत्री शन्नोदेवी की स्मृति में शन्नोदेवी स्थिर रजत पदक	स्नातिका परीक्षा में वेद में सर्वप्रथम रहने वाली कन्या को।	ब्र० अरुन्धती नवस्नातिका
(६)	श्रीमती रानीसाहबा विजवां (शाहपुरा) की ओर से स्नातिका परीक्षा में प्रथम रहने के लिये कुमारीदेवी स्वर्णपदक सम्वत् १९९५ तथा १९९६ में।	स्नातिका परीक्षा में सर्वप्रथम रहने वाली कन्या को।	ब्र० शोभावती नवस्नातिका १९९५ ब्र० प्रकाशवती नवस्नातिका १९९६

अन्य प्राप्त पदक जो वितीर्ण किये गये:—

क्रम सं०	नाम पदक	किस निमित्त दिया	किस को मिला
(१)	श्रीमती अनसूयादेवी विद्यालंकृता साहित्यरत्न द्वारा रजत पदक।	स्नातिका परीक्षा में दर्शन में सर्वप्रथम कन्या का।	ब्र० शकुन्तला नवस्नातिका
(२)	श्रीमान उमानन्द जैसाराम जी नया बाज़ार दिल्ली।	शिल्प में उत्तम कन्याओं को स्वर्ण-पदक।	ब्र० सुशीला गंगटक ब्र० चन्द्रवती फीजी
(३)	श्री इन्द्रजित जी शर्मा आसाम से रजत पदक।	शिल्प में रजत पदक	ब्र० लीलावती अफ्रीका।
(४)	कु० पद्मिनीदेवी जी एम०ए० की ओर से उत्तम ड्रिल करान अर्थ रजत पदक।	उत्तम ड्रिल कराने के लिये रजत पदक	कु० शीलवती विद्यालंकृता को।
(५)	कन्या गुरुकुल की ओर से शिल्प में उत्तम कार्य सिखाने के उपलक्ष्य में।	उत्तम शिल्प काम सिखाने के उपलक्ष्य में २५) पारितोषक	कु० शीलवती विद्यालंकृता को।
(६)	श्री कु० ब्रह्मवती जी वि० अ० सा० र० की ओर से।	९ म श्रेणी की आर्य-भाषा में प्रथम कन्या को।	ब्र० लक्ष्मी महाराष्ट्र।
(७)	श्री कु० कलावती जी वि.अ. सा० र० की ओर से।	एकादश श्रेणी की आर्यभाषा में प्रथम कन्या को।	ब्र० प्रकाशवती नवस्नातिका।
(८)	श्री कु० कलावती जी वि.अ. सा० र० की ओर से।	अधिकारी श्रेणी के संस्कृत साहित्य में सर्व प्रथम कन्या को	ब्र० सुषमा देहरादून
(९)	श्री कु० वेदवती विद्यालंकृता साहित्यरत्न की ओर से।	स्नातिका परीक्षा में भारतीय इतिहास में सर्व प्रथम कन्या को।	ब्र० अरुन्धती नवस्नातिका।
(१०)	श्री कु० ब्रह्मवती विद्यालंकृता साहित्यरत्न की ओर से।	स्नातिका परीक्षा में धर्मशिक्षा में सर्व प्रथम कन्या को।	ब्र० अरुन्धती नवस्नातिका।

कन्यागुरुकुल के महोत्सव पर चर्खा दंगल ता० १० नवम्बर १९३९ ई० को श्रीमती सरस्वतीदेवी जी सोनी, व्यवस्थापिका चर्खा मण्डल देहरादून की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें कालेज से पञ्चम श्रेणी तक की कन्याओं ने भाग लिया। नवस्नातिका ब्र० अरुन्धती सर्वप्रथम रही। उसको 'मातृभूमि अब्दकोश' पारितोषक में दिया गया और एकादश से ५म तक की प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय रहने वाली कन्याओं को निम्न प्रकार पारितोषक दिया गया:—

एकादश श्रेणी	(१)	ब्र० कौशल्यादेवी बम्बई	(१) मेरी कहानी (२) गांधी की आंधी	
दशम ,,	(१)	,, सुशीलादेवी गंगटक	(१) सरल स्वास्थ्यरक्षा (२) इतना तो जानो ही	
,,	(२)	,, चन्द्रवती फीजी	(१) इतना तो जानो ही	
अष्टम ,,	(१)	,, शान्ति मेरठ	(१) पेटी चर्खा	श्री पं० दीपचन्द जी शर्मा करणपुर द्वारा प्रदत्त।
	(२)	,, प्रकाशवती डेरागाजीखां	(१) पेटी चर्खा	श्रीयुत महावीर-प्रसाद जी सं० ब्र० सावित्री।
	(३)	,, सावित्री बद्रीपुर	(१) इतना तो जानो ही (२) सरल स्वास्थ्यरक्षा	
सप्तम ,,	(१)	,, सीतादेवी मद्रास	(१) पेटी चर्खा	नगर कांग्रेसकमेटी देहरादून के प्रधान द्वारा प्रदत्त।
	(२)	,, सावित्री मुजफ्फरनगर	(१) इतना तो जानो ही [२] सरल स्वास्थ्यरक्षा	
	(३)	,, दयावती संगरूर	[१] इतना तो जानो ही	
षष्ठ श्रेणी	(१)	,, कौशल्या ब्रह्मा	[१] पेटी चर्खा	,,
	(२)	,, शकुन्तला लाहौर	[१] इतना तो जानो ही [२] सरल स्वास्थ्यरक्षा	
	(३)	,, शारदा पटना	[१] इतना तो जानो ही	
पञ्चम श्रेणी	(१)	,, गायत्री उड़ीसा	[१] पेटी चर्खा	,,
	(२)	,, उमा गुरदासपुर	[१] सरल स्वास्थ्यरक्षा [२] इतना तो जानो ही	

श्रीयुत पं० बद्रीनाथ जी छिब्बर हैडमास्टर डी० ए० वी० हाईस्कूल की ओर से 'गांधी अभिनन्दन' ग्रन्थ व्यायाम में सर्वप्रथम कन्या को दिया गया।

॥ छात्र-वृत्तियां ॥

नाम छात्रवृत्ति	धन	किस कन्या को दीगई	सूचना
स्थिर			
श्रीमती रामभोलीदेवी जी गोरखपुर निवासी से।	४०००)	ब्र० गायत्री गोरखपुर सुपुत्री रामभोलीदेवी जी।	इस कन्या की शिक्षा समाप्त होने पर किसी अछूत बालिका को दी जावेगी।
श्री म० गोविन्दसहाय जी गुजरांवाला।	४०००)	ब्र० विमला पौत्री म० गोविन्दसहाय जी।	
अस्थिर			
आर्यसमाज फिरोजपुर द्वारा सुमतिदेवी छात्रवृत्ति एक अछूत बालिका के लिये।	१५००)	ब्र० लक्ष्मी टमटा (गढ़वाली बालिका)	
श्री सेठ राधाकृष्ण ओमप्रकाश जी अमृतसर निवासी की ओर से।	१७००)	ब्र० भारती सं० पं० रामेश्वर जी स्नातक)	केवल सूद की सहायता दी जाती है।
श्री म० दीनानाथ जी कालिया कपूरथला की ओर से अपनी पुत्री ब्र० रक्षावती के लिये।	१५००)	ब्र० रक्षावती (कपूरथला)	
श्री म० हरदयाल जी फीजी की ओर से अपनी सुपुत्री ब्र० चन्द्रवती की शिक्षा के लिये।	१५००)	ब्र० चन्द्रवती फीजी	
श्री म० गंगासिंह जी भोगपुरकी ओर से अपनी पुत्री राजकुमारी के लिये	९००)	ब्र० राजकुमारी भोगपुर।	

नाम छात्रवृत्ति	धन	किस कन्याको दी गई	सूचना
श्री ला० दुलीचन्द जी पोर्टब्लेयर की ओर से अपनी सुपुत्री ब्र० सुशीला के लिये।	१५००)	ब्र० सुशीला पोर्टब्लेयर।	
आवागढ़ राज्य की ओर से छात्रवृत्ति।	१५००)	ब्र० ओमकुमारी गोरखपुर।	
श्री ला० रामचन्द्र जी रिटायर्ड S. D. O., देहरादून।	समाप्त	शेष धन से ब्र० प्रेमलता सं० स्वर्गीय मुन्नीलाल जी।	यह छात्रवृत्ति समाप्त होचुकी है।
श्री पं० अमीचन्द जी ठेकेदार।	५) मासिक सहायता	ब्र० गायत्री सं० म० अन्तर्यामी पंडा उड़ीसा।	
गढ़वाल छात्रवृत्ति से सभा द्वारा।	१५) मासिक	ब्र० सुभद्रा गढ़वाल २॥)	मासिक सहायता
		ब्र० शान्ति ,, २॥)	,,
		ब्र० ओमवती ,, १०)	,,
सहायतार्थ शुल्क निधि से	५) मासिक	ब्र० सुभद्रा गढ़वाल	
	,,	ब्र० शान्ति ,,	
	,,	ब्र० सुनीति बुलन्दशहर	
	,,	ब्र०प्रेमलता देहरादून	

कन्याओं की प्रान्त एवं श्रेणीवार संख्या वर्ष के आरम्भ में

वर्षारम्भ में कन्याओं की संख्या २५६ थीं। वर्ष भर में ४३ कन्यायें प्रविष्ट हुईं और ४२ कन्यायें पृथक् हुईं, जिनमें से ५ स्नातिका बन कर, ३ अधिकारी से उत्तीर्ण तथा १ अनुत्तीर्ण होकर, १ रोगी होकर गई और घर पर मृत्यु होगई तथा शेष ३२ विभिन्न कारणों से अपने २ घर चली गईं। एवं वर्ष के अन्त पर २५७ कन्यायें कुल में विद्याध्ययन कर रहीं है:—

श्रेणी	कुल सं०	संयुक्त प्रान्त	पञ्जाब	देहली	बम्बई	मद्रास	बङ्गाल	बिहार	उड़ीसा	हैदराबाद	राजपुताना	सिन्ध	सीमा-प्रान्त	बर्मा	फीजी	अफ्रीका	मध्यप्रदेश
११श	२	१	...	..	१	...	...	...	...	...	...	..	...	..	...	...	...
१०म	११	३	४	१	.	.	१	..	..	..	...	...	...	.	१	१	...
९म	९	६	२	..	..	.	...	.	...	१	...	...	...	..	...	...	..
८म	२४	११	८	३	...	...	.	..	...	..	१	..	....	.	.	१	....
७म	२५	९	...	८	१	२	२	१	..		...	...	...	...	...	२	...
६ष्ठ	३७	७	१५	३	..	१		१	.	१	२	१	...	१	.	५	...
५म	३७	११	१०	...	.	२	...	..	१	१	१	..	४	२	....	५	..
४र्थ	३१	९	१५	...	१	...	..	१	...	...	१	.	...		...	४	...
३य	३५	८	२०	...	.	...	१	१	...	१	१	..	...	...	१	२	...
२य	२३	४	५	..	२	१	...	..	.	१	...	१	३	...	..	५	१
१म	७	...	४	..	...	१	...	..	...	..	...	१	...	..	.	१	...
कच्ची	१६	४	६	...	२	...	..	..	....	....	...	२	...	...	...	२	..
योग	२५७	७३	८९	१५	७	७	४	४	१	५	६	५	७	३	२	२८	१

शिक्षा विभाग की कार्यकर्त्री देवियां

इस वर्ष निम्न देवियां शिक्षा विभाग में कार्य करती रहीं:—

(१) श्रीमती विद्यावती जी सेठ आचार्या ।
(२) ,, राधारानी जी उपाचार्या तथा प्रधानाधिष्ठात्री ।
(३) ,, सुशीला देवी जी काव्यतीर्थ स्थानापन्न मुख्याध्यापिका ।
(४) ,, आशितादास जी एम० ए० उपाध्याया भूगोल, मनोविज्ञान तथा आंगलभाषा ।
(५) श्री कु० शान्तादेवी जी शास्त्री उपाध्याया संस्कृतसाहित्य तथा व्याकरण ।
(६) ,, ब्रह्मवती जी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न, उपाध्याया वेद तथा इतिहास ।
(७) ,, वेदवती जी विद्यालंकृता, साहित्यरत्न, उपाध्याया वेद ।
(८) ,, अनसूयादेवी जी ,, उपाध्याया हिन्दी ।
(९) ,, कलावती जी ,, ,,
(१०) ,, पद्मिनीदेवी जी एम० ए० उपाध्याया गणित तथा विज्ञान ।
(११) ,, सावित्रीदेवी जी बी० ए० उपाध्याया गणित तथा आंगलभाषा ।
(१२) ,, कुमुदकुमारी जी एल० एस० एम० एफ० उपाध्याया गृहचिकित्सा ।
(१३) ,, शोभावती जी विद्यालंकृता अध्यापिका संस्कृत-साहित्य ।
(१४) ,, शीलवती जी ,, अध्यापिका हिन्दी ।
(१५) श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी अध्यापिका ४र्थ श्रेणी
(१६) ,, ईश्वरदेवी जी ,, ३य ,,
(१७) ,, अम्बिकादेवी जी ,, २य ,,
(१८) ,, गेंदीदेवी जी ,, १म ,,
(१९) ,, कुसुमकुमारी जी बोस ,, आलेख्य ।

(२०) श्रीमती यमुनादेवी जी अध्यापिका सिलाई।
(२१) श्रीमती सीतादेवी जी व्यायाम शिक्षिका।
(२२) श्री कु० संयोगितादेवी जी अध्यापिका सङ्गीत।
(२३) श्रीमती राजरानी जी अध्यपिका व्याकरण तथा संस्कृत।

उपरोक्त देवियों के अतिरिक्त श्री पं० धर्मदेव जी शास्त्री दर्शन-केसरी स्नातिका-अध्यापिकाओं तथा अन्य पढ़ने की इच्छा रखने वाली अध्यापिकाओं को संस्कृत की और श्री पं० वेदव्रत जी वेदालङ्कार उच्च परीक्षाओं की तय्यारी कराने के लिये शिक्षण का कार्य करते हैं, किन्तु ब्रह्मचारिणियों के पढ़ाने के लिए केवल देवियां ही हैं, पुरुष कोई नहीं पढ़ाता।

कु० सावित्रीदेवी जी बी० ए० वर्ष के आरम्भ में, श्री डा० कुमुदकुमारी जी तथा गेंदीदेवी जी वर्षके मध्य में चली गईं। कु० सावित्रीदेवी जी के स्थानमें श्रीमती आशितादास जी एम० ए० तथा श्रीमती गेंदीदेवी जी के स्थान में श्री कु० उषादेवी जी विद्यालंकृता नियुक्त की गई हैं। कु० सुशीलादेवी जी वि० अ०, साहित्यरत्न तथा श्रीमती अनसूयादेवी जी विद्यालंकृता कुछ दिनों कुल में रहकर आनरेरी सेवा करती रहीं। और श्रीमती शकुन्तलादेवी जी लगभग २ मास तक शिल्प तथा सिलाई का काम सिखा कर चली गईं। मुख्याध्यपिका का कार्य गत वर्ष की भान्ति श्रीमती सुशीलादेवी जी काव्यतीर्थ और लेडी डाक्टर की अनुपस्थिति में श्री डा० दीनानाथ जी कोहली एम० बी० बी० एस० कर रहे हैं। इस प्रकार सभी देवियां बड़े लगन तथा प्रेम से शिक्षा का कार्य चला रही हैं।

आश्रम में कार्य करने वाली देवियां

आश्रम का कार्य निम्न देवियों की देख रेख में चल रहा है:—

(१) श्रीमती आचार्या विद्यावती जी सेठ प्रधाननिरीक्षिका।
(२) ,, राधारानी जी प्रधानाधिष्ठात्री।
(३) ,, मलावीदेवी जी सहायक प्रधानाधिष्ठात्री।
(४) ,, विष्णुदेवी जी ,, ,,
(५) ,, भगवानदेवी जी ,, ,,

(६) श्रीमती हुक्मादेवी जी अधिष्ठात्री।
(७) ,, नन्दकौर जी ,,
(८) ,, सुभद्रादेवी जी ,,
(९) ,, रुद्रादेवी जी ,,
[१०] ,, ज्वालादेवी जी ,,
[११] ,, मनोहरादेवी जी ,,
[१२] ,, तारादेवी जी ,,
[१३] ,, लालीदेवी जी ,,
[१४] श्री कु० सुशीलादेवी जी ,,
[१५] ,, सत्यवती जी ,,

सुशिक्षिता अधिष्ठात्रियों की नियुक्ति के लिये भरसक प्रयत्न दिये हुये साधनों के अनुसार किया जाता रहा है किन्तु वे टिक नहीं रहीं। इस वर्ष श्रीमती विष्णुदेवी जी तथा श्रीमती भगवानदेवी जी को नियुक्त किया गया, परन्तु वे २ मास से अधिक नहीं टिकीं। श्रीमती हुक्मादेवी जी अधिष्ठात्री तथा श्रीमती लालीदेवी जी को पृथक् करना पड़ा। उपरोक्त देवियों के अतिरिक्त कालेज, ६ष्ठ, ७म, तथा ८म श्रेणी की आश्रम-व्यवस्था तथा संध्या-हवन करवाने आदि में स्नातिकाओं का भी सहयोग रहता है। इस प्रकार आश्रम का कार्य सुचारु रूप से चलता रहा।

भण्डार में कार्य करनेवाली देवियां

[१] श्रीमती राधारानीजी प्रधानाधिष्ठात्री तथा प्रधाननिरीक्षिका।
[२] ,, लालदेवी जी भण्डारिन।
[३] ,, विद्यावती जी लाहौर उपभण्डारिन।
[४] ,, विद्यावती जी खुर्जा ,,

इन की देख रेख में ५ और देवियाँ भण्डार में पाचिका तथा चौका बर्तन का कार्य करते रहे। इनके ५ कहार पानी भरने तथा अतिरिक्त मध्याह्नाश तैयार करने तथा भोजन-सामग्री दाल-चावल आदि साफ करने में नियम पूर्वक आश्रम की अधिष्ठात्रियां सहायता पहुँचाती हैं, जिससे ३०० व्यक्तियों के लिये नित्य भोजन की व्यवस्था होकर नियम पूर्वक और सुन्दर भोजन बनता है। इन देवियों का परिश्रम तथा प्रेमपूर्वक कार्य अतिसराहनीय है।

ब्रह्मचारिणियों का स्वास्थ्य

इस वर्ष की रोगतालिका देखने से गतवर्ष की अपेक्षा इस वर्ष रोगिणियों की संख्या १६६ से २१७ हो गई है। चिकिनपोक्स, खसरा तथा कनपेड़ों और मलेरिया का अधिक प्रकोप रहा है। इस वर्ष एक कन्या मलेरिया से रोगी हुई और रुग्णावस्था में ही उसे संरक्षक घर ले गये, वहां पर उसकी मृत्यु हो गई। और श्रीमती डाक्टर कुमुदकुमारी जी उत्सव के ठीक पश्चात् ही चली गई अतः अप्रविष्ठ रोगिणियों का रिकार्ड चिकित्सालय में ठीक नहीं कराया जा सका। श्री डा० दीनानाथ जी कोहली मेडीकल सुपरवाइजर चिकित्सा के अतिरिक्त चिकित्सालय में अप्रविष्ट रोगिणियों का विवरण रजिस्टरों में अङ्कित करने के लिये पर्याप्त समय नहीं दे सके, अतः अप्रविष्ट रोगिणियों की तालिका नहीं बनाई जासकी। श्री डा० दीनानाथ जी कोहली एम० बी०, बी० एस० मेडीकल सुपरवाइजर अपना कार्य बड़े प्रेम तथा संलग्नता से कर रहे हैं, जिसके लिये वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। श्रीमती दुर्गादेवी जी नर्स तथा श्री कु० अम्मिर्णा जी कम्पौण्डर अपना २ काम अत्यन्त परिश्रम तथा योग्यता से करती रही हैं। इस वर्ष होमनर्सिंग तथा गृहचिकित्सा का कोर्स लेडी डाक्टर के चले जाने से पूरा नहीं हो सका था, जिसको श्रीमती लेडी डाक्टर कुलदीपकौर जी L. S. M. F. ने अपनी अमूल्य अवैतनिक सेवायें देकर पूरा कराया, इस के लिये कुल उनका आभारी है तथा उन्हें विशेष धन्यवाद देता है।



ब्रह्मचारिणियों तथा कार्यकर्त्री देवियों का एक सम्मिलित चित्र ।

बीच में स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी बैठे हैं ।

रोगिणियों की तालिका

क्रम सं०	नाम रोग	अप्रविष्ट १९९५	अप्रविष्ट १९९६	सूचना
१	कुकड़े	११	७	इन में कमी १० रोगिणियों की हुई
२	आघात	८	२	
३	फोड़े	६	९	इसमें ३ रोगी बढ़े हैं।
४	जुकाम खाँसी	१६	२	इसमें २३ रोगिणियों की कमी हुई।
५	अपच	६	२	
६	आमवात	६	५	
७	कर्णरोग	१	...	
८	पेचिश	१०	७	
९	नकसीर	...	१	इनमें १ रोगी बढ़ा है।
१०	काकड़ा लाकड़ा	...	२६	इनमें २६ रोगी बढ़े हैं।
११	मलशुण्डिका	४	१	इनमें ६ रोगिणियों की कमी हुई।
१२	पेचिश	१०	७	
१३	मलेरिया	५८	९३	इनमें ६५ रोगी बढ़े हैं।
१४	सिर दर्द तथा कमजोरी	७	१	
१५	खसरा	५	२९	इनमें २४ ,, ,,
१६	खुजली	१०	१	इनमें ११ रोगिणियों की कमी हुई।
१७	टाइफाइड ज्वर	२	२	
१८	क्रिमि रोग	२	...	
१९	निमोनिया	३	६	इनमें ३ रोगी बढ़े।
२०	काली खांसी	१	...	इनमें १ रोगी कम हुआ
२१	कनपेड़े	...	१६	इनमें १६ रोगी बढ़े।
	योग	१६६	२१७	

कार्यालय तथा प्रबन्ध

गुरुकुल के बाह्य प्रबन्ध तथा अन्य कार्यों के सञ्चालन के लिये प्रबन्ध तथा कार्यालय विभाग हैं। कन्यागुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता आचार्य रामदेव जी कई वर्षों से रोगी चले आ रहे थे और इस वर्ष दिसम्बर मास में उनका स्वर्गवास होगया जिस से कन्यागुरुकुल को हरेक दृष्टि से महति क्षति पहुँची है। जब से मुख्याधिष्ठाता जी रोगी थे प्रबन्ध का सारा बोझ आचार्या जी के ऊपर था। किन्तु इस वर्ष प्रारम्भ से ही श्री आचार्य रामदेव जी अधिक रोगी रहे और दिसम्बर मास से तो उनका सहारा ही जाता रहा और श्रीमती आचार्या विद्यावती जी सेठ के कन्धों पर संस्था का सारा बोझ आन पड़ा। श्रीमती स्वामिनी विद्यासभा ने श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी उपप्रधान सभा को कन्यागुरुकुल का अध्यक्ष नियत किया हुआ है और अब आगामी वर्ष के चुनाव तक एक प्रबन्धकर्तृसभा ८ सज्जनों की नियुक्त की हुई है। कार्य की अधिकता के कारण श्री आचार्या जी की सहायता के लिये सम्वत् १९९२ से प्रबन्ध में श्री पं० रमेशचन्द्र जी मैनेजर का कार्य करते हैं और वे प्रबन्ध का समस्त कार्य आचार्या जी की देख रेख में भली प्रकार सम्पादन करते हैं और इसके लिये वे विशेष प्रशंसा के पात्र हैं। धनसंग्रह कार्य में भी उन से पर्याप्त सहायता मिलती है। कार्यालय का कार्य एक कार्यालयाध्यक्ष और तीन लेखकों द्वारा पूर्ववत् चल रहा है। लेखानिरीक्षण का कार्य श्रीमान् सरदार मेहरसिंह जी रिटायर्ड गवर्नमेण्ट सीनीयर आडिटर, जो सभा से नियुक्त हैं, करते हैं। मार्गशीर्ष १९९६ तक के वौचरों तथा बिलों का निरीक्षण हो चुका है। उनके लेखानिरीक्षण के रिमार्क निम्न प्रकार हैं:-

"मैंने निरीक्षण में अनुभव किया है कि रजिस्टर, रोकड़ आदि बड़े साफ़ सुथरे हैं और कि स्टाफ Totals तथा calculations में बड़ा accurate है। परन्तु हिसाब बड़े elaborate system पर चल रहा है और कि simplify करने की आवश्यकता है। ....आदि"

शिल्प तथा खादी विभाग

इस विभाग को आरम्भ करने के लिये शाहपुरा राज्य की वर्तमान रानी साहिबा ने गुरुकुल के आरम्भ होने से दो-तीन वर्ष पश्चात



शिलपशाला में बैठकर कन्याएं लैस बुन रही हैं।

१०००) प्रदान किया था। इसी राशि से यह विभाग चलाया जा रहा है। उसका नाम भी श्रीमती रानी साहिबा के नाम पर "कुंवरानी लाडकुंवर गृहप्रबन्ध विभाग" रखा गया है। शाहपुरा राज्य (राजपुताना) की आरम्भ से ही गुरुकुल पर कृपा रही है। स्वर्गीय महाराजा श्री नाहरसिंह जी बहादुर जहां समय २ पर अपने दान से इस संस्था का पोषण करते रहे हैं वहां स्वयं भी एक बार गुरुकुल पधारे थे। वर्तमान महाराजा श्रीमान् महाराजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी, जिनकी कन्यागुरुकुल पर असीम कृपा तथा प्रेम है, दो बार पधार चुके हैं। राजपरिवार के इस कुलप्रेम तथा दानशीलता के लिये कुल उनका कृतज्ञ है तथा उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता है।

कन्याओं को शिल्पकार्य में दक्ष बनाने तथा इस विभाग को उन्नत करने में श्रीमती ओमवती जी विशारदा, बी० ए०, धर्मपत्नी डा० रामजीनारायण जी D. Sc., Ph. D., लायलपुर का हाथ बड़ा जबरदस्त है। १९३० से १९३२ तक घोर परिश्रम कर जहां आप ने इसे उन्नत अवस्था में पहुँचाया है, वहां १०००) शिल्प भवन के लिये, और १५०) नकद तथा लगभग ३५०) कलाकौमुदी की विक्री से ५००) की लागत से विद्यालय की कोठी के निकट एक सुन्दर फुव्वारा भी बनवा दिया है। इसके अतिरिक्त अपनी सुन्दर कृति कलाकौमुदी तथा शिल्पसूची कार्ड कन्या गुरुकुल को प्रदान किये हुये हैं। और गतवर्ष भी एक-डेढ़ मास कन्यागुरुकुल में रह कर कन्याओं को नये २ डिज़ायन सिखा गईं। उत्सव पर पधारे हुए दर्शकों ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की। लैस बुनने का कार्य गत वर्ष से एक विशेष आविष्कार की गई मशीन पर उन्होंने बड़े आयोजन के साथ आरम्भ करवाया है। लैस बुनने वाली क्लास का चित्र साथ है।

श्रीमती कुसुमकुमारी जी बोस आलेख्य-अध्यापिका कन्याओं को जहां पेन्टिंग का कार्य सिखाती हैं वहां ट्रिप्लाई पर वुड वर्क, जैसे फ्रेम काटना तथा लेटर बक्स, मेज, कुर्सी के मौडिल बनाना आदि कार्य भी सिखाती हैं। कुछ एक अन्य आकर्षक खेल भी सिखाती हैं, जिन्हें कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की प्रदर्शनी में दर्शकों ने बहुत पसन्द किया था।

खादी का कार्य भी गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष अधिक उन्नत अवस्था में रहा है। सम्वत् १९९४ तक केवल कातने का आयोजन

किया जा सका, किन्तु १९९५ से खड्डी लगा कर बुनाई का काम भी आरम्भ है। शर्टिंग, तथा साधारण खद्दर की बुनाई के साथ २ दरियां तथा निवार भी तय्यार किये जाते हैं। देहरादून के महिला-समाज में जागृति फैलाने वाली श्रीमती सरस्वतीदेवी जी का पूरा पूरा सहयोग इस कार्य में मिलता रहा है। आचार्या जी भी नित्य एक-आध घंटा खड्डी में लगाकर कताई तथा बुनाई का काम करती हैं। यदि इसी प्रगति पर काम जारी रहा तो पूर्ण आशा है कि भविष्य में इस विभाग में पर्याप्त उन्नति होगी।

व्यायाम

व्यायामशाला में शारीरिक उन्नति के लिये झूला, सीसा, हौरिजैन्टलबार, क्रासिंग ब्रिज आदि हैं जिन से छोटी कन्याएं बड़े आनन्द के साथ अपना मनोविनोद करती हैं। बड़ी कन्याएं श्रीमती सीतादेवी जी व्यायामशिक्षिका के निरीक्षण में गतका, लाठी, छुरी, टिफरी तथा लेजम आदि के बड़े अच्छे अच्छे स्वाथ्यप्रद तथा चित्ताकर्षक देशी खेल बड़े चाव से सिखती हैं। संगीत के साथ लेजिम और टिफरी के खेल तो विशेष चित्ताकर्षक होते हैं। इस वर्ष श्रीमती सीतादेवी जी अधिक समय तक रोगी रहीं। अतः उनकी अनुपस्थिति में श्री कुमारी शीलवती जी विद्यालंकृता व्यायाम की देख-रेख करती रहीं। बाहर से पधारने वाली दर्शिकाओं तथा विशेष दर्शकों पर इसका प्रभाव पड़ता है। इस वर्ष श्री कुमारी मेधादेवी जी (सुपुत्री श्रीमान् सेठ रामकिशोर जी रईस देहरादून) ने अपना अमूल्य समय देकर गर्ल्स-गाइडिंग तथा ड्रिल लगभग ८० कन्याओं को सिखाई है, जिसके लिये वे धन्यवाद तथा विशेष प्रशंसा की पात्रा हैं। आशा है कि श्री सेठ जी का परिवार इसी प्रकार कुल के प्रति सहानुभूति रखेगा। खेल वाली कन्याओं के चित्र साथ हैं।

बालिका समाज

प्रति रविवार को बड़ी कन्याओं की रात्रि में और छोटी कन्याओं की दिन में सभा होती है। इस में कन्याओं को बोलने का अभ्यास कराया जाता है और समाचार-पत्रों द्वारा प्राप्त देश के सामयिक सामाजिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक समाचारों से भी उन्हें अवगत



कन्याओं के व्यायाम (मुद्गर के खेल) का एक दृश्य।

कराया जाता है। इसके अतिरिक्त वक्तृत्वकला की उन्नति के लिये प्रत्येक शनिवार को वाग्वर्द्धिनी सभा को बैठक संस्कृत-अध्यापिका की अध्यक्षता में हुआ करती है, जिसमें कन्यायें संस्कृत में भाषण करती हैं।

इन साप्ताहिक अधिवेशनों के अतिरिक्त सभी आर्य त्योहार तथा राष्ट्रिय पर्व बड़े समारोह के साथ मनाये जाते हैं, जिसमें अध्यापिकायें भी भाग लेती हैं। विशेषतः श्रद्धानन्द सप्ताह का कार्यक्रम बड़ा रोचक हुआ करता है जिसमें कन्याएं गुरुकुल के अहाते में प्रभात फेरी करती और गगनभेदी जयकारों से आकाश गुंजा देती हैं, किन्तु इस वर्ष श्री आचार्य रामदेव जी के स्वर्गवास हो जाने से कुल में शोक छाया रहा।

पुस्तकालय तथा वाचनालय

पुस्तकालय में हिन्दी, अंग्रेजी की पुस्तकों की संख्या १६४९ है। गतवर्ष १६०० पुस्तकें थीं, अतः ४९ पुस्तकें इस वर्ष क्रय की गई हैं। इस वर्ष भी विशेष पुस्तकें क्रय नहीं की जा सकी, किन्तु जितनी भी पुस्तकें हैं उनका उपयोग अध्यापिकाओं द्वारा कन्यायें करती रही हैं। स्थानाभाव के कारण उतनी उत्तमता से इन पुस्तकों का प्रयोग नहीं हो सकता जितना कि होना चाहिये, फिर भी यथासम्भव लाभ उठाया जाता है। साथ साथ एक वाचनालय भी है जिस में प्रायः सभी दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र-पत्रिकायें जो मूल्य द्वारा अथवा विना मूल्य के प्राप्त होते रहे, कन्याएं उनका उपयोग करती रहीं:—

दैनिक —ट्रिब्यून, हिन्दुस्तान टाइम्स, नेशनल हेरल्ड, अर्जुन तथा प्रताप उर्दू।

साप्ताहिक—आज, प्रताप, गुरुकुल, आर्यमित्र, हरिजन, संघर्ष, मिलाप, आर्यमुसाफिर, प्रकाश, राज उर्दू तथा कर्मभूमि।

मासिक —माधुरी, सरस्वती, विशाल भारत, माडर्न रिव्यू, वैदिक-धर्म, सार्वदेशिक, भूगोल, सम्मेलन पत्रिका, शिक्षण पत्रिका, विप्लव, सर्वोदय, रूरल इण्डिया तथा श्री हैं।

गोशाला तथा वृषभशाला

पिछले पांच-सात वर्षों से परीक्षण के तौर पर एक छोटी सी गौशाला भी चलाई जा रही है। यद्यपि इसका आरम्भ स्थानीय कुछ एक सज्जनों द्वारा दान में दी हुई गायों से हुआ था तथापि इस समय तक १८ गायें, कलोल, ११ बच्चे, १ भैंस, ४ बैल तथा एक घोड़ी है। इन में से दूध देने वाली ५ गायें, ४ गाभिन तथा ९ गायें बिना दूध वाली हैं और जो हैं भी अच्छा नस्ल की न होने से विशेष लाभ नहीं है। तथापि एक ओर तो स्वच्छ और ताजे दूध का प्रलोभन है और दूसरी ओर यह भी विचार है कि अन्य घरेलू उद्योग धन्धों के साथ २ कन्याओं को गोपालन की शिक्षा भी दी जा सके। भारतवर्ष में गोभक्त दानियों की कमी नहीं है। सम्वत् १९९४ में भारत के प्रख्यात दानी श्रीयुत बिड़ला जी ने एक अच्छी गोशाला चलाने के लिये गुरुकुल कांगड़ी को दश हजार का दान दिया है। सम्भवतः किसी दानी महानुभाव को भगवान् की ओर से इसी प्रकार की प्रेरणा हो जाय और उनकी दानशीलता से हमारी गोशाला भी परिपुष्ट होकर सुन्दर ढंग पर चलने योग्य बन जाय। इसी विचार से उसे अब तक जैसे तैसे चलाया जा रहा है। इस वर्ष गौशाला का घाटा पूरा करने के लिये बिना दूध देने वाली गायों को लक्ष्मण चौक में ८ मास तक जंगल में चरने के लिये रक्खा गया, जिससे गत वर्षों की अपेक्षा कम घाटा रहा।

वार्षिकोत्सव

इस वर्ष वार्षिकोत्सव ता० १०, ११, १२, १३ तथा १४ नवम्बर सन् १९३९ ई० को आर्यसमाज देहरादून के वार्षिकोत्सव के साथ २ अनिवार्य कारणों से रखना पड़ा, इस लिये रात्रि में कोई प्रोग्राम नहीं रक्खा जा सका। उत्सव पर माननीय विद्वानों और विदुषी देवियों के प्रभावशाली व्याख्यानों के साथ २ नवस्नातिकाओं का दीक्षान्त संस्कार, नवप्रविष्ट कन्याओं के वेदारम्भ संस्कार, देववाणी सम्मेलन तथा सरस्वती सम्मेलन की चित्ताकर्षक बैठकें और अन्य महत्वपूर्ण सम्मेलन बड़ी सफलता पूर्वक हुये। स्वदेशी, छोटी सी किन्तु सुन्दर, प्रदर्शनी द्वारा, जिसका उद्घाटन श्री १०८ पूज्य महन्त लक्ष्मणदास जी के कर कमलों से हुआ, कन्याओं के हाथ की बनी ऊनी तथा सूती

माल की बुनाई, सिलाई तथा कढ़ाई की वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया, जिसे आगन्तुक दर्शकों ने बड़ा पसन्द किया तथा बिक्री भी अच्छी हुई।

दीक्षान्त-अभिभाषण महिला जगत् में प्रख्याति-प्राप्त श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर जी ने दिया। देवी जी कितनी जबरदस्त राष्ट्रीय विचारों वाली तथा उच्चकोटि की वक्त्री हैं यह किसी से छिपा नहीं है। अतः उनके सारगर्भित तथा विद्वत्तापूर्ण भाषण की जनता ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

पारितोषक-वितरण-समारोह आप की ही अध्यक्षता में मनाया गया और महिला सम्मेलन की अध्यक्षता का आसन भी आपने ही सुशोभित किया। श्रीमती चन्द्रावती जी लखनपाल एम० ए०, बी० टी० तथा श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए० के प्रधानत्व में सरस्वती सम्मेलन की दो बैठकें बड़ी सफलता के साथ हुईं। इन में कुमारी ब्रह्मवती विद्यालंकृता साहित्यरत्न ने "भारत का उद्धार मेम साहब के हाथ में नहीं किन्तु भारत की देवियों के हाथ है", कुमारी कलावती विद्यालंकृता साहित्यरत्न ने "प्रजातन्त्र की समस्या" विषयों पर निबन्ध पढ़े। एवं, कुमारी शान्तादेवी के प्रधानत्व में देववाणी सम्मेलन हुआ और संस्कृत में "हिन्दू महासभा तथा कांग्रेस" विषय पर वाद-विवाद हुआ।

अन्य वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी अन्तःकन्यामहाविद्यालय वादविवाद सम्मेलन रखा गया था, जिसमें बाहर के कन्या महाविद्यालयों को भी आमन्त्रित किया गया था। विजेता महाविद्यालय को सम्मानित करने के लिये एक चांदी की ट्राफी वीणा के रूप में रखी गई है, किन्तु बाहर के किसी भी महाविद्यालय ने अभी तक चैलेञ्ज को स्वीकार करने का साहस नहीं किया और ट्राफी को कन्यागुरुकुल से बाहर निकलने का अवसर नहीं मिला।

हिन्दी के वादविवाद का विषय "हिन्दू मुसलिम समस्या और कांग्रेस" था, जिसकी प्रधाना श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर जी तथा जज श्रीमान् पं० ठाकुरदत्त जी वैद्य तथा श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज टिहरी थे।

वादविवादमें कन्याओं की वक्तृताशक्ति, विषय-ज्ञान, और भाषणशैली

से जनता इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने कन्याओं की और संस्था की भूरि २ प्रशंसा की। कु० वेदवती विद्यालंकृता साहित्यरत्न ने "वेद की राजनीति" पर वेदसम्मेलन में श्री पं० सुखदेवजी के प्रधानत्वमें निबन्ध पढ़ा। इन सब निबन्ध पढ़ने वाली स्नातिकाओं को स्वर्णपदक दिये गये और हिन्दी तथा संस्कृत वादविवाद में प्रथम तथा द्वितीय कन्याओं को स्वर्णपदक तथा रजत पदक क्रमशः दिये गये—

हिन्दी वाद विवाद में

प्रथम—ब्र० कौशल्या बम्बई (रजतपदक)
द्वितीय – ब्र० प्रभातशोभा (,,)

संस्कृत वादविवाद में

प्रथम—ब्र०लक्ष्मी (स्वर्णपदक, श्री म० लक्ष्मणदेव जी सर्राफ देहरादून)
द्वितीय—ब्र० रामावती (,,)
तृतीय—ब्र० सीता (रजतपदक, श्रीयुक्त म० सत्येन्द्रसिंह जी बद्रीपुर)

निबन्ध पढ़ने में

कु० ब्रह्मवती जी वि० अ०, सा० र०, स्वर्णपदक श्री हीरालाल जी स्याना द्वारा
,, कलावती जी ,, ,, ,, श्री मथुरादास जी लायलपुर द्वारा।
,, वेदवती जी ,, ,, ,, श्री म० लक्ष्मणदेव जी सर्राफ देहरादून।

व्याख्याताओं में स्वामी अभयदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी श्रीमान् कुंवर रणञ्जयसिंह जी अमेठी राज्य (अवध), श्रीयुक्त र० वि० धुलेकर एम० एल० ए० झांसी, श्रीमान् राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री पं० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति गुरुकुल कांगड़ी, तथा श्री पं० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति और श्रीमती सीतादेवी जी विशारदा के नाम विशेषतया उल्लेखनीय हैं।

इस वर्ष उत्सव से पूर्व धन की दृष्टि से सफलता की आशा कम थी क्योंकि श्री आचार्य रामदेव जी वर्ष के प्रारम्भ से ही रोगी अधिक हो गये थे और बीच में कुछ दिनों के लिये ठीक भी हुये किन्तु फिर दुबारा अधिक रोगी हो गये। ज्यों त्यों करके कुछ बिमारी से अवकाश मिलते ही उन्हों ने समाचार पत्रों में उत्सव की घोषणा करा दी, और उनको धन एकत्रित कराने की इतनी चिन्ता थी कि वे रुग्णावस्था ही में जलवायु परिवर्तनार्थ दिल्ली गये और वहां पर श्री आचार्या जी को बुलाया और उनकी आज्ञानुसार धन एकत्रित करने का काम शुरु किया गया और दिल्ली से पर्याप्त सफलता मिली। इसके पश्चात देहरादून में भी श्री आचार्य जी ने, पं० धर्मदेव जी तथा पं० रमेशचन्द्र जी मैनेजर की सहायता से अच्छी धन राशि एकत्रित की और लाहौर भी डिपुटेशन भेजा गया वहां से भी कुछ न कुछ प्राप्त हो ही गया। श्रीमान् पं० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार, पालीरत्न का भी धन एकत्रित करने में सहयोग रहा और मसूरी, पञ्जाब से श्रीमान् रा० सा० अमृतराय जी की सहायता से लगभग १०००) के जमा हुआ। और श्री आचार्य जी के कठिन परिश्रम से तथा श्रीमान् पं० महावीर त्यागी एम० एल० ए० के प्रयत्न से ६ बीघा ७ बिस्वा भूमि २५४०) के मूल्य की दान में प्राप्त होगई।

श्री आचार्य रामदेव जी को कन्यागुरुकुल की आर्थिक अवस्था हीन होजाने की वजह से इतनी चिन्ता थी कि यद्यपि उनका बोल साफ नहीं निकलता था फिर भी दिल्ली में जो कोई उनसे मिलता था सब से कन्यागुरुकुल की सहायता के लिये अपील करते रहते थे और श्री ला० देशबन्धु जी गुप्त तथा श्री प्रो० सुधाकर जी द्वारा प्रेरणा कराके श्री सेठ श्रीराम जी क्लाथ मिल दिल्ली से २०००) का वचन विद्यालय भवन के लिये ले लिया और ५००) का चैक भी मगा लिया। इसी प्रकार श्री आचार्या विद्यावती जी सेठ ने लेडी सर जगदीशप्रसाद जी से भोजनशाला निर्माण के लिये ५ हजार का वचन ले लिया और उत्सव के दिनों में ही २०००) प्राप्त भी कर लिये। इस प्रकार २५४०) का भूमिदान मिलाकर लगभग १८ हजार की घोषणा उत्सव पर की गई। विगत वर्षों की अपेक्षा धन तो कम एकत्रित हुआ, फिर भी जितने परिश्रम और लगन से धन संग्रह का काम एक मास में हुआ उसको देख कर इतनी बड़ी धन राशि का एकत्रित होना मामूली बात नहीं थी।

इस वर्ष का उत्सव आर्यसमाज के उत्सव के साथ २ होते हुये भी बहुत सफल रहा। पण्डाल भी खूब भरा रहता था और श्री आचार्य रामदेव जी उत्सव के दिनो में पण्डाल में आराम कुर्सी पर लेटे हुये हर समय मौजूद रहे। यह कौन जानता था कि यही उत्सव उनके सामने और होना है, उसके पश्चात् वे हमसे सदा के लिये जुदा हो जावेंगे और कन्यागुरुकुल को एक अनाथ अवस्था में छोड़ जावेंगे। भगवान की लीला अपरम्पार है।

इस वर्ष ५ कन्यायें दीक्षा लेकर अपने २ घरों को गईं तो ४३ कन्याओं ने यज्ञोपवीत धारण कर वेदारम्भ कराया है। नवीन कन्याओं का वेदारम्भ संस्कार-समारोह भी कन्यागुरुकुल के उत्सव का एक बड़ा ही भावप्रद संस्कार है। छोटी कन्याओं का यज्ञोपवीत धारण कर प्राचीन प्रणाली की तरह भिक्षाटन करना आर्य संस्कृति की प्राचीन उच्चता को प्रकट करता हुआ गुरु-शिष्य के पवित्र और अटूट सम्बन्ध का ज्वलन्त प्रमाण देता है।

इस वर्ष के प्रबन्ध में पूर्व वर्षों की भांति भोजन भण्डार का समस्त प्रबन्ध श्री आचार्य रामदेव जी के रोगी होते हुये भी श्रीमती विद्याधरी जी के जिम्मे रहा, किन्तु कैम्प के प्रबन्ध के लिये श्रीयुत सेठी अमरनाथ जी कोहाट को बुलाया गया और उन्होंने अत्यन्त प्रेम तथा संलग्नता से अपने कर्तव्य को निभाया, इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है कि इसी प्रकार और संरक्षक महानुभाव भी अपना सहयोग देकर प्रबन्ध कार्य में हमारा हाथ बटावेंगे।

प्रतिष्ठित दर्शक

इस वर्ष प्रतिष्ठित दर्शक विगत वर्षों की अपेक्षा कम आये हैं और उनकी सम्मतियां अन्त में दी हुईं हैं। श्रीयुत परीक्षितलाल जी मजूमदार, मन्त्री गुजरात हरिजन सेवकसंघ (साबरमती) तथा श्रीयुत मंज़रअली सोख़्ता के नाम विशेषतया उल्लेखनीय हैं। इन सज्जनों ने गुरुकुल का प्रेमपूर्वक निरीक्षण कर जो सम्मति दी है वह भी अन्यत्र दी जा रही है। संस्था का अवलोकन कर कन्याओं की योग्यता आदि देख कर बड़े प्रभावित हो कर गये हैं।

मन्दिरनिर्माण और उस निधिमें प्राप्त दान

इस निधि में अब तक ७४३९६) प्राप्त हो चुके हैं, जिसमें से अब तक ५४३०९) के भवन बन चुके हैं, जिनका ब्योरा निम्न प्रकार है:—

आश्रम का पुराना ब्लोक	२९.५०१)
,, ,, नया ब्लौक	१५,०००)
शौचालय	१,७००)
चिकित्सालय	१,०००)
पुरानी धर्मशाला	१,७००)
नई धर्मशाला	२,५००)
म० दुनीचन्द का मकान	६८०)
श्री लालदेवी जी के २ कमरे (भण्डार स्टोर)	९१८)
फुव्वारा	४९०)
भोजनशाला	८२०)
योग	५४३०९)

इस वर्ष मन्दिर निर्माण निधि में ७,३२९) निम्न सज्जनों से प्राप्त हुये हैं, जो उपरोक्त ७४,३९६) की राशि में शामिल हैं:—

मन्दिर निर्माण निधिके दानियों का विवरण

[१]	श्रीमती यमुनादेवी जी कन्यागुरुकुल देहरादून	१०००)
[२]	श्री पं० अमीचन्द जी ठेकेदार	५००)
[३]	,, ,, मनफूलसिंह जी शर्मा ठेकेदार नवाबगंज	५००)
[४]	,, ला० आत्मप्रकाश जी नम्बरदार सरायसिद्धू	५००)
[५]	,, डा० बांकेलाल जी देहरादून ५००) मद्धे	२५०)
[६]	,, डा० बी० एल० सूद अम्बाला ५००) ,,	२५०)
[७]	,, टी० सी० वर्मा बम्बई	१००)
[८]	,, बानाराम जी ओल्ड सेक्रेटेरीयेट बिल्डिंग दिल्ली	२००)
[९]	,, पं० भीमसेन जी पटना ५००) मद्धे	१७०)
[१०]	,, सोमेश्वरलाल जी इञ्जीनियर ५००)मद्धे	१००)
[११]	ठा० जीतसिंह जी हाथीबड़कला की धर्मपत्नी	२५०)
[१२]	श्रीमती कुंवरानी सर जगदीशप्रसाद जी दिल्ली	२०००)

[१३] कु० शान्तिदेवी वि० अ० दिल्ली १०१)
[१४] ,, मायावती वि० अ० नवादा ५१)
[१५] ,, प्रकाशवती ,, पट्टीमण्डी लाहौर १०५)
[१६] श्री सरस्वतीदेवी जी लाहौर १००)
[१७] ,, राजा नरेन्द्रनाथ जी लाहौर ५०)
[१८] ,, डा० केदारनाथ जी खुड़बुड़ा देहरादून १०००) मद्धे १००)
[१९] ,, म० जयन्तीशरणजी डुबलिस मवानाकलां ५००) मद्धे १००)
[२०] ,, प्रो० महीपाल जी गुप्त ५००) मद्धे १००)
[२१] ,, ला० श्रीराम जी क्लॉथ मिल दिल्ली २०००) मद्धे ५००)
[२२] ,, ,, दयालदास जी नारायणदास जी बैजनाथ जी तलवाड़ लाहौर ३०२॥)

योग ७३२९॥)

अन्य निधियों में भी निम्न प्रकार ५१८१=)। प्राप्त हुये हैं:—

स्थिर छात्रवृत्ति	९००)
अस्थिर छात्रवृत्ति	१५२४॥।
गौशाला	६४॥)
फलादि	३७॥≡)।
भण्डार दान	६०॥=)॥।
नल के लिये	२९)
पदक	२५)
भूमिदान श्री महन्त लक्ष्मणदास जी से	२५३०)
योग	५१८१=)।

उपरोक्त दान के अतिरिक्त पुरुषार्थ निधि, डिपुटेशनों द्वारा, तथा अन्य दान और प्रतिज्ञा में इस वर्ष केवल ५०९८॥=)॥ प्राप्त हुये हैं, जिनके ब्यौरे की सूचियाँ निम्न हैं:—

पुरुषार्थनिधि द्वारा तथा अन्यदान

१	श्री सावित्रीदेवी जी कस्पाला द्वारा पु० नि०	६८)
२	,, म० गङ्गाराम जी झाँसी ,, ,, ,,	४०)
३	डा० लक्ष्मणदास जी दुआवा	५०)
४	स्वर्गीय दरियावल जी की धर्मपत्नी लायलपुर	२५)
५	डा० मनोहरलाल जी वार्ता	४५)
६	W. N.. D. F. O., अमरावती	२५)
७	चौ० प्रतापसिंह जी बद्रीपुर	२५)
८	म० प्रकाशचन्द जी लल्तो लुधियाना	२५)
९	स्वर्गीय रा० सा० रामप्रसाद जी की धर्मपत्नी	२५)
१०	म० रामलाल जी धम की धर्मपत्नी	४०)
११	रा० सा० सुरेन्द्रनाथ जी कुर्दवाड़ी	२५)
१२	म० मनोहरलाल जी ओवरसीयर जुनिहा	२५)
१३	म० पूर्ण लोइकात्र ब्रह्मा	२५)
१४	म० मुलकराजदत्त क्वेटा द्वारा पु० नि०	५०)
१५	रा० सा० नरसिंहदास जी मलिक	३९॥)
१६	म० आत्मप्रकाश जी क्वेटा द्वारा पु० नि०	२८॥-)
१७	श्री डा० अमीचन्द जी द्वारा	५३॥=)
१८	,, सेठ रामकिशोर जी की धर्मपत्नी देहरादून	२५)
१९	म० झम्मनलाल जी द्वारा बद्रीप्रसाद विश्वम्भरनाथ से	२५)
	,, ,, ,, म० कन्हैयालाल जी दिल्ली	२५)
२०	म० रघुवंशलाल जी कपिल पेशावर द्वारा पु० नि०	३६॥)
२१	श्री लालचन्द जी चड्ढा रावलपिण्डी द्वारा	६०)
२२	,, डा० प्रभुदयाल जी लखनऊ	२५)
२३	,, डा० प्रभुदयाल जी लखनऊ की माता जी	२५)
२४	,, रामचन्द्र जी S. D. O. मेरठ	१०१)
२५	,, जमुनादेवी जी तथा स्नातिकाओं द्वारा देहरादून से	७६)
२६	विविध	६४०॥=)॥

२७	पं० रामचन्द्रजी दिल्ली	५०)
२८	ला० बांकेलाल हीरालाल जी सयाना	२५)
२९	श्री रामप्यारी जी खन्ना	२५)
३०	सरदार अनोखराय जी	१००)
३१	श्री रामजीवाई धर्मपत्नी स० हुकमसिंह जी	५०)
३२	ला० बृजलाल जी नम्बरदार पौदागांव	५०)
		१९५४॥=)॥

डिपुटेशनों द्वारा एकत्रित धनका ब्यौरा

श्रीविद्यावती जी सेठ आचार्या तथा म० रमेशचन्द्रजी का डेपुटेशन

धर्मपत्नी स्वर्गीय गौरीशंकर जी दिल्ली	२५)
श्री कर्मदेवी जी धर्मपत्नी ला० नारायणदत्त जी २०) गिलासों के लिये, २५) पु० नि०	४५)
म० तेजबहादुर जी थापा दिल्ली	५१)
श्री ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार दिल्ली	१०१)
,, ,, ज्ञानचन्द्जी ,, ,,	१००)
,, ,, रलाराम मेलाराम जी ,, ,,	१०१)
धर्मपत्नी ला० बनवारीलाल जी ,, ,,	५१)
,, स्वर्गीय गिरधारीलाल जी ,, ,,	५१)
पं० मूलचन्द जी दिल्ली	५०)
म० हंसराज जी गुप्त दिल्ली	१५०)
श्री बनवारीलाल जी लोहिये चावड़ी बाजार	५१)
,, वैजनाथ जी स्याल फ्लावर मिल दिल्ली	५०)
,, बा० मिलखासिंह जी ठेकेदार दिल्ली	१०१)
,, मनोहरनाथ जी गर्ग मोहन ब्रादर्स दिल्ली	१०१)
,, लक्ष्मीनारायण जी गड़ोदिया	५०)
विविध	१८९)
श्री महन्त परशुराम जी हृषीकेश	५१)
विविध प्रकार	५६)
	१३७४)

पं० रमेशचन्द्रजी तथा पं० धर्मदेव जी का डेपुटेशन

श्री अमरनाथ जी वाहल लाहौर	५०)
,, पं० के० सन्तानम चेयरमैन लक्ष्मी बीमा कम्पनी	२५)
आर्यसमाज वच्छोवाली	५०)
विविध	१०४)
	२२९)

श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी द्वारा

पं० विद्यानन्द जी लाहौर	२५)
ला० मेहरचन्द जी दिल्ली	२५)
ला० बालकराम जी लाहौर	५०)
डा० देवराज जी ,,	५१)
विविध	८२)
	२३३)

पं० चन्द्रमणि जी तथा स्ना० ब्रह्मवती जी का डेपुटेशन

रा० सा० अमृतरायजी अम्बाला छावनी	१०१)
श्री डिपुटी दीवानचन्द जी ,,	५१)
रा० सा० विक्रमजीत जी इन्जिनीयर अम्बाला छावनी	२५)
रविवर्मास्टीलवर्क रेडियो तथा कारखाना विभाग	३५)
विविध अम्बाला छावनी से	१७७)
ला० वीरूमल चिरंजीलाल जी पटियाला	५१)
विविध पटियाला से	४९)
विविध बहावलपुर से	५४)
ला० गंगाराम रामशरणदास जी सोलन	५१)
श्रीयुत राजा साहब सोलन	३१)
विविध सोलन से	३९—)
आर्यसमाज शाहाबाद तथा करनाल से	३०)
विविध मसूरी से	१९६)
	८९०—)

श्री विद्याधरी जी द्वारा

विडला मिल दिल्ली	५०)
श्री सुमित्रादेवी जी जमशेदपुर	२५)
,, चन्द्रावती प्रिंसिपल महादेवी कन्यापाठशाला देहरादून	२५)
विविध	९३)
	१९३)

प्रतिज्ञा मद्धे प्राप्त का व्यौरा

१	म० बी० आर० शर्मा नैरोबी	१०)
२	म० सोमेश्वरलाल जी श्रीवास्तव	१०)
३	,, बानाराम जी दिल्ली	१०)
४	,, थारियालाल जी	१०)
५	,, वोसाराम जी लाहौर	१०)
६	,, अमरनाथ जी ,,	५०)
७	,, चिरंजीलाल जी अम्बाला छावनी	१०)
८	,, भाई काहनसिंह ,,	१०)
९	,, प्रेमदास जी ,,	५)
१०	,, देवीप्रसाद जी अजमेर ,,	१००)
		२२५)
	सर्वयोग	५०९८॥=)॥

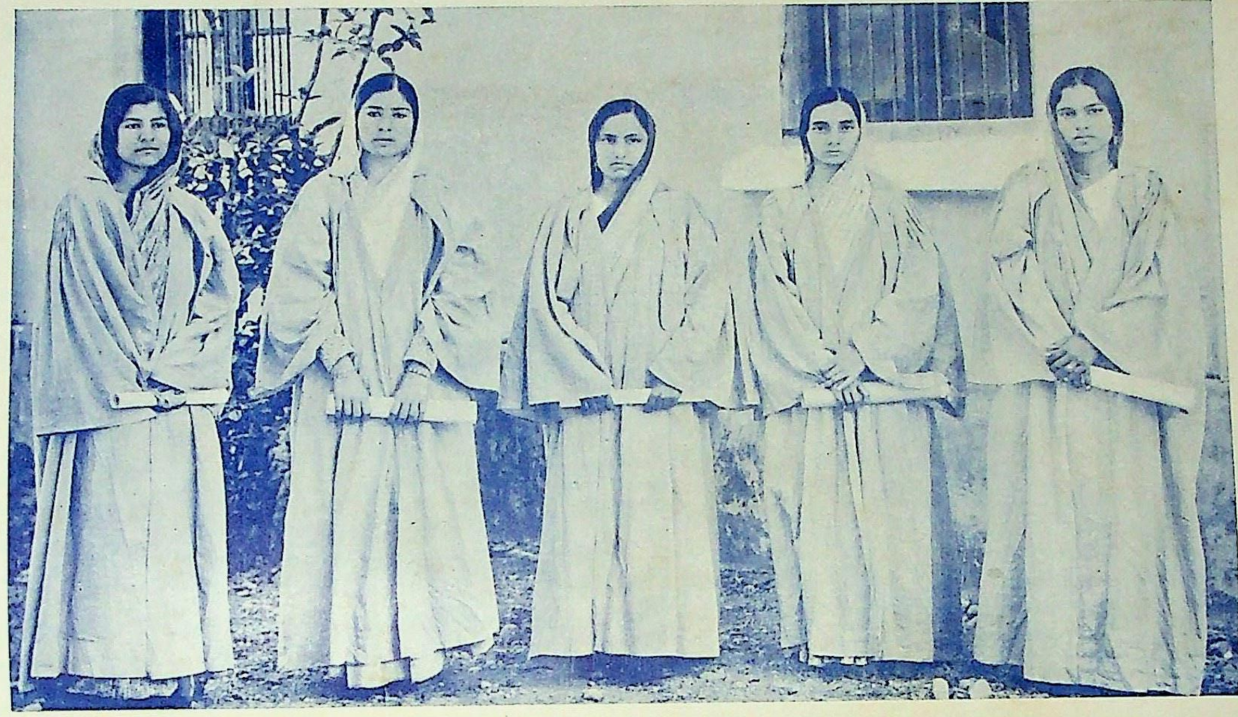
वजट

इस वर्ष वजट ७००४८) का स्वीकार हुआ था जिस में से ६३१६२-)॥ व्यय हुआ है और आय केवल ५२२५८॥-)॥। हुई है, अतः इस वर्ष भी महानिधि में १०,९०३) का घाटा रहा है। इस घाटे का मुख्य कारण यह है कि गत वर्ष की भान्ति श्री रामदेव जी के लगातार रोगी रहने के कारण कोई डिपुटेशन गत वर्ष की भान्ति नहीं जा सके जिससे महानिधि में आय केवल ५०९८॥=)॥ ही हुई और गतवर्ष १६४१४) आय महानिधि से हुई थी। व्यय में पूरी किफायत की गई और गत वर्ष से ९००) व्यय कम किया गया। परन्तु जब महानिधि में आय ही कम हुई तव तो घाटा होना अनिवार्य ही है। कन्यागुरुकुल की उपयोगिता, उसकी कन्याओं की उत्तरोत्तर वृद्धि तथा आगन्तुक प्रतिष्ठित दर्शकों की सम्मतियों से भलीप्रकार ज्ञात हो सकती है। ऐसी उपयोगी और आवश्यक संस्था धन के अभाव से विकास न पासके, इस से बढ़कर दुःख की बात और क्या हो सकती है। आर्य-जनता जो विद्यादान में सब से बढ़कर है अपनी इस उपयोगी संस्था की कमी पूरी कर न सके यह विचारा भी नहीं जा सकता। प्रबन्ध-कर्तृसभा के सदस्यों से आशा है कि वे आगामी वर्ष में पिछले घाटे को पूरा करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे और धीरे २ संस्था को अपने पैरों पर खड़ा करने में पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

परानी कन्या स्नातिकाओं का एक ग्रुप।



पुरानी कुछ स्नातिकाओं का एक ग्रुप।



नवीन स्नातिकाओं का ग्रुप।

इस वर्ष तक गुरुकुल में ६३५ कन्याएं प्रविष्ट होचुकी हैं, जिनमें से ८४ कन्याएं स्नातिका तथा अधिकारी परीक्षा पास करके तथा २९४ विभिन्न कारणों से, एवं कुल ३७८ कन्याएं अब तक चली गइ हैं और इस समय २५७ कन्याएं कुल में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

कन्यागुरुकुल देहरादून के आय-व्यय का व्यौरा

सम्वत् १९९६

आय				व्यय			
क्रम सं०	शीर्षक	आनुमानिक आय	वास्तविक आय	क्रम सं०	शीर्षक	आनुमानिक व्यय	वास्तविक व्यय
१	महानिधि	२१८२९)	५०९८॥≡)।	१	भण्डार		
				२	चिकित्सालय	४५०००)	४४८९९।॥=)
२	भण्डारदान	५०)	१३५=)।	३	स्वास्थ्यरक्षा		
३	शुल्क	४५०००)	४५९१६॥≡)	४	दायाद्य	८००)	६३४॥≡)॥१
४	दायाद्य	८००)	६८५।॥=)॥	५	शिक्षा	१४७००)	१११५६।॥=)
				६	कार्यालय	८४०)	६४७=)।॥
				७	प्रबन्ध	३५०८)	३७३६)॥
५	म० रामशरण जी की वसीयत का ¼ भाग	९)	९=)	८	अतिथिसेवा	३५०)	[illegible]५६।॥=)
				९	वार्षिकोत्सव	९००)	८९६॥-)॥
६	म्यूनिस्पल्टी से सहायता	३६०)	३६०)	१०	वार्षिकवृत्तान्त का मुद्रण	२००)	७२॥=)
७	विज्ञान सामग्री क्रय करने अर्थ	२०००)	५३)	११	गुरुकुल प्रचार	७००)	२९८।-)।॥
				१२	मन्दिर सुधरवाई	८००)	२६०।=)॥
				१३	उपकरण सुधरवाई	...	...
				१४	सभा दशांश	२५०)	२५०)
				१५	विज्ञान सामग्री	२०००)	५२।)
	योग	७००४८)	५२२५८॥-)।॥			७००४८)	६३१६२-)।१

प्रतिष्ठित दर्शक और उनकी सम्मतियां

इस वर्ष भी बहुत से प्रतिष्ठित महानुभावों ने कन्यागुरुकुल में पधार कर उसका अवलोकन किया। अतः इस वर्ष के दर्शकों तथा समय २ पर पधारे प्रतिष्ठित दर्शकों की सम्मतियां निम्न प्रकार हैं:—

(१) "आज मुझे प्रो० रामदेवजी के साथ इस संस्था का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। यहां पर बालिकाओं की शिक्षाप्रणाली सराहनीय है। इस सुव्यवस्था को देखकर यह आशा बंधती है कि भारतवर्ष के स्त्रीसमाज की दशा में नूतन सुधार होगा। बालिकाओं की धार्मिक शिक्षा तथा शारीरिक दशा एवं उनके धार्मिक वा सामाजिक विचार जान कर अत्यन्त सन्तोष हुआ। इतने कम समय में इस संस्था को इतनी उन्नत दशा पर पहुंची देखकर यह कहना ठीक होगा कि यहां के कार्यकर्ताओं का परिश्रम या उद्योग सराहनीय है। मैं इच्छा करता हूं कि इस संस्था की वृद्धि हो और ऐसा होने से हमारा स्त्रीसमाज उन्नत बने। भारतवर्ष में ऐसी संस्था की इस समय नितान्त आवश्यकता है। आशा है कि विचारशील तथा उत्साही सज्जनगण परिश्रम कर ऐसी संस्थायें भिन्न २ स्थानों में बनावेंगे।"

(ह०) उम्मेदसिंह, राजकुमार शाहपुरा

(२) "आज मैंने डा० केशदेव शास्त्री की प्रेरणा से अपने ज्येष्ठ पुत्र कुं० उम्मेदसिंह तथा अपने कर्मचारी के साथ कन्यागुरुकुल इन्द्रप्रस्थ देखा। श्री आचार्या विद्यावती जी का प्रबन्ध तथा तत्परता प्रशंसनीय है। जिस लगन से वह कन्याओं को सुयोग्य बनाने में प्रयत्नशील रहती हैं वह सराहनीय है। कन्याओं के स्वास्थ्य व उनके नियमाकूल रहन-सहन को देख कर चित्त प्रसन्न हुआ। कन्याओं की ही सुशिक्षा तथा सुचारु जीवन पर जाति का भावी जीवन निर्भर है। अतः इस कुल की जितनी भी सहायता की जावे वह थोड़ी है। मेरी हार्दिक भावना है कि यह संस्था दिनोंदिन उन्नति को प्राप्त हो, तथा इस कुल के द्वारा ऋषि दयानन्द प्रदर्शित शिक्षा का आदर्श न केवल भारतवर्ष में, अपितु अन्य देशों में भी गौरवान्वित हो। मेरी इस संस्था से पूर्ण सहानुभूति है। इति"

(ह०) सर नाहरसिंह राजाधिराज

22-2-27

K. C. I. E. of Shahpura State,
(Raijputana)

(३) "आज मैंने श्री आचार्य रामदेव जी के साथ कन्यागुरुकुल [दिल्ली] देखा। इसमें सन्देह नहीं कि यह कन्यागुरुकुल परम प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। मैं दानवीर सज्जनों से प्रार्थना करता हूं कि इसकी यथाशक्ति सहायता करें।"

(ह०) कुं० रणञ्जयसिंह M. L. A.
११-३-२७ राजपुत्र अमेठी राज्य
जिला सुलतानपुर (अवध)

(४) 'मैंने श्री चिन्तामणि वैद्य तथा अन्य मित्रों के साथ यह कन्या गुरुकुल देखा। आचार्य रामदेव जी तथा श्रीमती विद्यावती देवी जी के प्रयत्न से जो काम हुआ है वह प्रशंसनीय है। लड़कों के गुरुकुल बहुत हैं, परन्तु बालिकाओं का गुरुकुल देखने का मुझे बहुत कम अवसर मिला है। इसे देख कर मुझे हर्ष हुआ। मुझे आशा है कि यह गुरुकुल दिन २ वृद्धि पावेगा और उसके संचालकों का उद्देश्य सफल होगा तथा चरखा और खादी का अधिक प्रचार होकर देशसेवा के लिये यह संस्था उत्तम साधन बनेगी।"

(ह०) सेठ जमुनालाल बजाज वर्धा

(५) "आज मुझे ठा० रामचन्द्रसिंह साहेब के साथ कन्यागुरुकुल देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रबन्ध प्रशंसनीय है। शिक्षा की हालत को देख कर चित्त को बहुत प्रसन्नता हुई। भिन्न २ विषयों पर अनेक प्रश्न किये गये और कई बार उत्तरों को सुन कर मुग्ध होना पड़ा। आचार्या जी तथा अन्य अध्यापिकायें विद्वान, सुशील तथा सहृदय हैं। लड़कियों के स्वास्थ्य की ओर काफी ध्यान दिया जाता है। भोजन का प्रबन्ध भी अच्छा है, इस कारण सब स्वस्थ और प्रसन्नचित्त हैं। यह संस्था एक अद्वितीय संस्था है और हर प्रकार की सहायता जनता से पाने की अधिकारिणी है। परमात्मा प्रबन्धकों को चिरायु करे।"

R. Singh
24-5-28

G. H. Binchurkar,
Comptroller of Charities
Awa Raj (Etah)

(6) "I visited the Kanya Gurukul on the 25th May, 1928 and it was a great pleasure to me to find that the most upto-date knowlege of Economics, History and Politics imparted to girls of the higher classes in vernacular. I think that kind of

education is more beneficialf or the young ladies of our country than the education imparted through the medium of a foreign language where necessarily most of the time of the student is occupied in learning that language. The Hindi of the students of different classes that I visited was exceptionally good."

२५-५-१९३८ (Sd.) Ugersain,
President Municipal Board
Dehra Dun.

(७, "मैंने कल आचार्य रामदेव जी के साथ कन्यागुरुकुल देखा। गुरुकुल अभी एक किराये की कोठी में है। कन्याओं के शयन, स्नान, भोजन आदि के लिये अस्थाई, किन्तु अच्छे सुदृढ़ लकड़ी के मकान बने हुये हैं, जो सब स्वच्छ पाये गये। पाठालय में सामान आदि भी पर्याप्त है।

गुरुकुल में इस समय १६२ कन्यायें हैं और विद्यालय की आठ कक्षाओं के अतिरिक्त महाविद्यालय की एक कक्षा भी खुल चुकी है, जिसमें तीन कन्यायें हैं। इस बात को ध्यान में रखकर कि गुरुकुल को खुले लगभग ५ वर्ष ही हुये, यह बात उसके लिये कम गौरव की नहीं है।

गुरुकुल की आचार्या श्री विद्यावती जी बी० ए० हैं, जो अवैतनिक कार्य करती हैं। ७ व ८ अन्य अध्यापिकायें हैं। उनमें भी कुछ अवैतनिक हैं। ८ म तथा ९ म श्रेणियों की कन्यायें भी कुछ निचली कक्षाओं को पढ़ाती हैं। इससे अध्यापिकाओं की कमी की पूर्ति भी हो जाती है और इन उच्च कक्षाओं की कन्याओं को स्वाध्याय के अतिरिक्त अध्यापन-कार्य की भी कुछ शिक्षा मिल जाती है जिससे यदि इनमें से कोई अध्यापिका बने तो योग्य अध्यापिका हो सकती है।

मैंने सब श्रेणियों को देखा और लगभग सब श्रेणियों की कुछ विषयों में परीक्षा ली, कन्याओं ने सन्तोषदायक उत्तर दिये। पठन-पाठन का कार्य सब प्रकार सन्तोषजनक पाया गया। कातने, बुनने, सीने परोने आदि की शिक्षा भी बहुत अच्छी तरह दी जाती है। कन्याओं का रहन-सहन और दिनचर्या प्रशंसनीय है। कुछ कन्याओं के अतिरिक्त सब कन्यायें स्वस्थ पाई गयीं।

यह गुरुकुल कन्याओं की शिक्षा के लिये एक आदर्श संस्था है। आशा है कि जनता इसको यथोचित सहायता देगी, जिससे इसकी उत्तरोत्तर उन्नति और वृद्धि हो। गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रामदेव जी, जो मुख्याधिष्ठाता का काम करते हैं, और श्रीमती विद्यावती सेठ आचार्या जी का उद्योग सर्वथा प्रशंसनीय है। परमात्मा उनको सफल-कार्य करे।

(ह०) गङ्गाप्रसाद, चीफजज तथा
ज्युडीशिअल मेम्बर टीहरी गढ़वाल स्टेट

(८) "मैंने आज कन्या गुरुकुल देहरादून को देखा और कन्याओं के साथ बैठकर भोजन भी किया। संस्था को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे आशा है कि जब संस्था का अपना मकान बन जावेगा तो कार्य विधिवत् होने से संस्था बहुत सेवा करेगी। यदि कुछ देवियां तथा और पुरुष श्रीमती आचार्या विद्यावती जी सेठ को सहायता दें तो संस्था बहुत उत्तम हो सकती है। ऐसी संस्थाओं की सहायता करना प्रत्येक नर-नारी का कर्तव्य है।"

ता० २२-१-३० (ह०) ला० देवराज

(9) "I had the pleasure of visiting this institution yesterday with my wife and daughter. We were shwon round the whole place. We saw the classes at work, the girls at play, the hostel and dormitories and the grounds. We are deeply impressed with all that we saw. Since institutions are doing real nation-building work our national work in all spheres will get literally redoubet strength, if our women are trained as they are in this institution. I am particularly struck by the fact that here an earnest and from all account successful attempt is being made to combine all that is best in our culture with all that is useful andn ecessary for modern life. I wish there were many more such institutions throughout the country. We wish this institution continuing success, usefulness and service."

3-4-36 S. S. Satyamurti. M. L. A.

(10; 'I visited Kanya Gurukula with my wife this afternoon and I found the institution a very wonderful work. The supporters have been doing

a great national service. We earnestly hope that the institution under able guidance of Shri Vidyawati Devi Ji Seth, progresses fast and attains greater fame and support from our rich donors. They are plucky no doubt but our donors also must come forth and assist the workers.

With all our best wishes for this institution.

4th January 1937

Appa Saheb Pant,
Pratinidhi of Vishalgadh.
Kolhapur Residences.

(११) "We were very happy to see this institution to-day. Such institutions more than any thing else build the national life of our country. These must spread throughout the country. We wish the institution all success."

T. S. Avinash Lingham,
M. L. A. (Central).

(१२) "आचार्या विद्यावती सेठ और आचार्य रामदेव जी के साथ कन्यागुरुकुल देखने का शुभ अवसर कल मुझे प्राप्त हुआ। लगभग दो घंटे मैंने गुरुकुल में लगाये। उसके सभी विभागों का दिग्दर्शन मुझे कराया गया। ऊंची कक्षाओं की कन्याओं से उनके पाठ्य विषयों पर आचार्य रामदेव जी ने प्रश्न किये और कन्याओं ने जो उत्तर दिये उससे यह प्रकट हुआ कि अपनी भाषा द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के कारण गहन विषयों में भी वे अपनी बुद्धि की स्फूर्ति से प्रवेश कर सकती हैं और उन पर स्वतंत्र विचार कर सकती हैं।

गुरुकुल का स्थान सुन्दर और स्वास्थ्यकर है। कन्याओं के मुखपर प्रसन्नता तथा बुद्धि की प्रभा दिखाई देती थी। मुझे निश्चय है कि दिन २ इस संस्था की उन्नति होगी और अन्य संस्थायें भी इससे अपने लिये उचित मार्ग देखेंगी।

मैं संचालकों को और अध्यापिकाओं को, जो ऊंचे आदर्शों को सामने रखकर कार्य कर रही हैं, बधाई देता हूँ।"

२१-११-३३

(ह०) पुरुषोत्तमदास टन्डन

(१३) "श्री आचार्य रामदेव जी तथा श्रीमती विद्यावती जी सेठ आचार्या की आज्ञा से मैंने कन्यागुरुकुल देहरादून का निरीक्षण किया। दोनों महानुभावों ने मुझे सब श्रेणियां दिखलाईं जबकि वे पठन-पाठन कर रही थीं। इस गुरुकुल में ८ वर्ष के पठन के पश्चात् अधिकारी परीक्षा ली जाती है और फिर तीन वर्ष महाविद्यालय की पढ़ाई है। पहिली आठ श्रेणियों में हिन्दी, संस्कृत द्वारा सब ही विषय पढ़ाये जाते हैं। महाविद्यालय विभाग में भी हिन्दी माध्यम द्वारा ही पढ़ाई होती है, अंग्रेजी केवल ऐच्छिक विषय है। मैंने तथा आचार्य रामदेवजी ने धर्म, इतिहास आदि पर कई प्रश्न कन्याओं से किये और उन्होंने प्राय: ठीक उत्तर दिये। एक कन्या ने दो वेदमन्त्रों का भी अर्थ ठीक २ सुनाया। भिन्न २ श्रेणियों को देखा। कन्याओं के शुद्ध वेदमन्त्रों का उच्चारण सुन कर मैं प्रसन्न हुआ। चूंकि कन्या-गुरुकुल में विदेशी भाषा के द्वारा शिक्षा नहीं दी जाती, इसलिये इन को ज्ञान-उपलब्धि में अन्य शिक्षणालयों की कन्याओं से कम समय खर्च करना पड़ता है।

चूंकि पाठशाला और आश्रम के स्थान एक ऐसी कोठी में है जो अभी मूल्य पर ली गई है, इसलिये इस बात की आवश्यकता है कि विद्यालय के लिये नया भवन बनाया जावे। आश्रम भी इस समय ऐसे कमरों में है जो केवल अस्थिर रूप से काम चलाने के लिये खड़े किये गये हैं। मुझे यह बताया गया है कि विद्यालय के लिये नवीन भवन बनाने का निश्चय हो गया है और उसके लिये कुछ धन भी एकत्रित है। मैं आशा करता हूं कि आचार्य रामदेव जी के पुरुषार्थ से और श्रीमती विद्यावती जी आचार्या के परिश्रम से एक सुन्दर भवन शीघ्र ही बन जावेगा और कुल की पुत्रियें आनन्द पूर्वक उस में वास और शिक्षा ग्रहण करेंगी।

इस संस्था का वायुमण्डल सामाजिक है। कन्याओं को हिन्दी और संस्कृत से अत्यन्त प्रेम है, वे संस्कृत लिख तथा बोल सकती हैं। दो कन्याओं ने संस्कृत में अपने लेख पढ़े। मैं अनुभव करता हूँ कि श्रीमती आचार्या जी के त्याग और परिश्रम से यह संस्था उन्नत होगी। और अब जब आचार्य रामदेव जी ने, जिन की कार्यशक्ति बहुत बड़ी है, इस संस्था के कार्य में सहयोग दिया है, तो यह संस्था और भी उन्नत होगी। परमात्मा संचालकों के पुरुषार्थ को सफल करें। मैं सञ्चालकों के अनुग्रह के लिए उनका धन्यवाद करता हूं।"

(ह०) महात्मा हंसराज

११ भाद्रपद १९९०

(१४) "कन्यागुरुकुल देखने की बहुत दिनों की इच्छा थी। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के आचार्य रामदेव जी जहां पर हैं वहां की पढ़ाई और व्यवस्था के बारे में कहने को क्या रहता है? संस्था में लड़कियां प्रसन्न हैं। अध्यापिकायें कुल में कुटुम्ब के समान रहती हैं। मुझे आश्चर्य है कि इतने थोड़े दिनों में विद्यार्थिनियों को इतना ज्ञान कैसे भर दिया जाता है।

यहां का वातावरण, रहन-सहन की सादगी, लड़कियों की निर्भयता और विनय सब कुछ अभिनन्दनीय है। संस्था में मैंने साम्प्रदायिकता से राष्ट्रीयता अधिक पाई। संस्था का उत्तरोत्तर उत्कर्ष चाहता हूँ।"

देहरादून
२३-१०-३६ } (ह०) काका कालेलकर

(१५) "आज मैं कन्यागुरुकुल देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। आचार्य रामदेव जी ने अस्वस्थ होते हुए भी बड़े प्रेम और उत्साह से ४ घंटे तक मुझको इस संस्था की बहुत सी बातें दिखलायीं, मैं इसके लिए उनका सदैव आभारी रहूँगा। यद्यपि यह आर्यसामाजिक संस्था है और इसमें संस्कृत की प्रधानता है, तथापि इसमें राष्ट्रीयता और आधुनिकता की पुट पर्याप्त मात्रा में है। इसके संचालक यहां के वातावरण को धार्मिक तथा राष्ट्रीय बनाए रखने का बराबर प्रयत्न करते रहते हैं और इसमें काफी सफल भी हुये हैं।

विद्यार्थिनियों के आश्रम जीवन की छाप मेरे मन पर बहुत अच्छी पड़ी। इनका जीवन बहुत ही सादा और राष्ट्रीय है और देश के अन्य कन्या आश्रमों के लिए अनुकरणीय है। प्रायः सभी कन्यायें प्रसन्न, स्वच्छ, स्वस्थ और खद्दरधारिणी दिखलाई पड़ीं। अन्य अंग्रेजी कन्या पाठशालाओं के दोष इनके दैनिक व्यवहारों में दिखलाई नहीं पड़े।

हिन्दी साहित्य के अध्ययन की ओर भी काफी ध्यान दिया जाता है। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी होने के कारण महाविद्यालय की लड़कियों का विषय ज्ञान तथा प्रवेश अंग्रेजी स्कूल और कालिजों की अपेक्षा अच्छा है। इनके इतिहास की जानकारी तथा सामयिक राष्ट्रीय ज्ञातव्य बातों का ज्ञान देख कर मुझ को आश्चर्य हुआ। इस

विशेषता के लिए यह संस्था आचार्य रामदेव जी की ऋणी है। इस संस्था में संगीत (classical music), भारतीय चित्र कला (Indian painting) और उच्च कोटि के गृहविज्ञान की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिये जाते हुये देख कर मुझ को प्रसन्नता होगी।"

(ह०) सङ्गमलाल अग्रवाल

१४-६-३७ रजिस्ट्रार महिलाविद्यापीठ प्रयाग

(१६) "It was a great pleasure indeed to visit Kanya Gurukula at Dehra Dun on 21st instant. I must thank Mr. Ram Deva for taking me round and explaining every thing in detail. All the classes were at work. The girls were looking very bright and happy. I asked the girl of class X several questions on politics and I was quite satisfied with the answers. It seems to me that these girls can beat some of the boys too in art knowledge. There sewing and knitting deserves special credit. The thing that struck me is the happy and homely atmosphere of the institution. The girls brought up in these surroundings will be an asset to our country no doubt. I wish the institution every success and prosperity."

Miss J. Dasgupta, M. A. T. D., (Lond.),

21-9-37 Special fellow of the Calcutta University,

Home address – 44 Hazara Road,

Calcutta.

GOVERNMENT UNITED PROVINCES.

(१७) "It has given me pleasure to visit the Kanya Gurukula at Dehra Dun. The girls appear well cared for and well institution. The institution deserves praise for the way in which it is managed and run. I am grateful to the students and staff for the warmth of their welcome to me, and I wish the institution every successes."

Dehra Dun

October 12th 1937.

Vijai Lakshmi Pandit,

Minister for Local Self-Government & Health, U. P.

(१८) आज मैंने श्री आचार्य रामदेव जी के साथ कन्यागुरुकुल का निरीक्षण किया। बहुधा श्रेणियों में जाकर कन्याओं से प्रश्नोत्तर किये, प्रायः सभी कन्याओं ने सन्तोषजनक उत्तर दिये। कन्याओं का साधारण ज्ञान प्रशंसनीय है। उन्होंने वर्तमान अनेक राजनैतिक प्रश्नों के उत्तर सन्तोषजनक दिये। कन्याओं के भाषण संस्कृत और हिन्दी में सुने। उनके व्यायाम लेजम आदि भी देखे। प्रत्येक कृत्य नियमित और प्रभावोत्पादक हैं। भोजन, रहन सहन का भी प्रबन्ध बहुत अच्छा है। इस समय २३० कन्यायें इस गुरुकुल में हैं, जिसमें से केवल ३ रोगीगृह में मिलीं और सब स्वस्थ हैं और सभी का स्वास्थ्य अच्छा है। मैं गुरुकुल के इस सर्वतोभावेन उन्नत दशा में होने के लिये आचार्य रामदेव तथा आचार्या विद्यावती को बधाई देता हूं।"

(ह०) नारायणस्वामी

(१९) "इस वर्ष कन्यागुरुकुल देहरादून के वार्षिकोत्सव के अवसर पर इस संस्था के सम्यक्रूपेण निरीक्षण का सुअवसर प्राप्त हुआ। लगातार ८-९ दिनों तक कन्यागुरुकुल ही में अतिथिस्वरूप निवास कर इसके सम्बन्ध में मुझे भलीप्रकार जानकारी प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हो सकी। ३-४ दिनों तक उत्सवों में सम्मिलित होकर ब्रह्मचारिणियों के हिन्दी तथा संस्कृत भाषा में भाषण, निबन्ध और वाद-विवाद श्रवण कर मैं इनके सम्बन्ध में अपना यह मत प्रकट करने के लिए समर्थ हुआ हूं कि भाषणकला, निबन्ध लेखन, तथा वादविवाद आदि विषयों में कुल की ब्रह्मचारिणियों की योग्यता अत्यन्त ही सराहनीय है। वर्तमान राजनैतिक विषयों पर समालोचनात्मक दृष्टि से स्वतन्त्र विचार प्रकट करना, कन्याओं की असाधारण मानसिक योग्यता का पूर्ण परिचायक है तथा विकाशवाद जैसे गम्भीर वैज्ञानिक विषय पर युक्तियुक्त तथा सप्रमाण निबन्ध लिखकर कुल की एक बुद्धिमती कन्या ने मुझे ऐसा मत निर्धारण करने के लिए विवश किया है कि यदि भारत में कन्याओं के लिए उपयुक्त शिक्षा प्रदान करने का प्रबन्ध किया जाय तो निश्चय है कि हमारी पुत्रियां हमारे पुत्रों से मानसिक योग्यता सम्पादन करनेमें किसी प्रकार पीछे नहीं रह सकतीं।

कई श्रेणियों की बालिकाओं की पढ़ाई तथा उनकी साधारण योग्यता की परीक्षा एक दिन मैं स्वयं आचार्य रामदेव जी के साथ घण्टों करता रहा। साहित्य, व्याकरण, इतिहास, आर्यसिद्धान्त तथा

राजनीति विषयक योग्यता का परिचय पाकर मेरा हृदय अत्यन्त ही सन्तुष्ट हुआ। ब्रह्मचारिणियों के उत्तर देने की शैली से मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि जिन शिक्षकों वा शिक्षिकाओं के हाथ इनके शिक्षण का भार है वे अपने विषयों की शिक्षणकला में अति ही प्रवीण हैं।

ब्रह्मचारिणियों के हृदयों में देशप्रेम, जातिप्रेम तथा धर्मप्रेम के भाव कूट २ कर भर दिये हैं। रहन-सहन में इनकी सादगी आदि व्यवहार प्राचीन भारत के तपोवन की कुलकन्याओं की स्मृति दिलाते हैं। इस महान् आदर्श को कुलकन्याओं के क्रियात्मक जीवन में सफलीभूत करने में आचार्य रामदेव जी तथा आचार्या श्रीमती विद्यावती जी सेठ आर्यजाति के हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

अन्त में इस कुल की कन्याओं से निकट भविष्य में मेरी उत्कट आशा है कि कुल में शिक्षा प्राप्त करने के अनन्तर इनमें की प्रत्येक कन्या न केवल एक सुगृहिणी तथा उत्तम कोटि की नागरिका ही बन कर अपनी शिक्षा के परम उद्देश्य की प्राप्ति में सन्तुष्ट होगी वरन् अपने उच्च ज्ञान तथा योग्यता द्वारा प्रेरित होकर वैदिकधर्म तथा आर्य संस्कृति की ध्वजा को देश देशान्तर तथा द्वीप द्वीपान्तर में फहरा कर मध्यकालीन भारत की सङ्घमित्रा जैसी महिलाओं की स्मृति को भारत सन्तान के हृदयों में फिर से परिस्फुटित कर देंगी।

ऐन दुआ अज़मन वाज़ जुमला जहान अमीन बाद।"

८-११-३७ (ह०) अयोध्याप्रसाद
वैदिक मिश्नरी कलकत्ता

(२०) "उत्तर में हिमालय, दक्षिण में शिवालिक, पूर्व में गंगा, पश्चिम में जमना के बीच रमणीक भूमि में स्थित कन्या गुरुकुल को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। देख कर चित्त प्रसन्न हुआ। १५ वर्ष से यह गुरुकुल यहां स्थापित है। २५० के लगभग कन्यायें दूर २ देशों से, कोई २ दक्षिण अफ्रीका-फिजी से भी आकर यहां पर अध्ययन करती हैं। आचार्या महोदया तथा सब अध्यापिकायें सुयोग्य तथा परिश्रमी हैं। लड़कियों की तन्दुरुस्ती अच्छी है। स्वच्छता व तन्दुरुस्ती पर विशेष ध्यान दिया जाता है। सब कन्याएं छात्रालय में रहती हैं। वातावरण वैदिक है। पूर्व में स्त्रियां किस प्रकार शिक्षा पाती थीं और भविष्य में कैसे गृहप्रबन्ध में तथा संसारयात्रा में व देशसेवा में

पारंगत होंगी, इस पर विशेष ध्यान दिया जाता है। व्यायाम संगीत के साथ जिस रोचकता व उत्साह से किया जाता है वह सराहनीय है। यह संस्था सरकार से कोई सहायता नहीं लेती, स्वावलम्बी तथा आत्मपोषी है। लड़कियों की दिमागी उन्नति को देख कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। ऐसी संस्थाओं की भारत में नितान्त आवश्यकता है। मैं हृदय से इसकी उन्नति चाहता हूँ।"

२३-१-३८ (ह०) बद्रीदत्त पांडे,
M. L. A (Central).

(२१) "I had the pleasure of visiting this wonderful institution this morning. Acharya Ram Deo took me round. I was imformed by the knowledge of the girls and I expressed in one of the classes that the girls knew more than what I did. Their Sanskrit pronounciations are excellent. It is one of the most important girls institutions. The main object of it being to educate girls to become good wives and mothers. Their skill in art is befiting the reputation of the institution. I am grateful to the authorities of the institution for giving me an opportunity of seeing the institution.

Dehra Dun
25-8-38

(Sd). M. B. Hudhika,
M. Sc. (Leeds),
Deputy Director of Industries,
U. P.

(२२) During my visit to Dehra Dun in May last I was delighted to be able to spend an hour at the Kanya Gurukul. It was to me a great and agreeable experience and I very much wish it were possible for me to spend a little more time to this institution. From all that I saw the management of the institution leaves nothing to be desired. It is run as a Gurukul and the young girls who according to the rules of the school, have to spend many years away from their homes are looked after with the greatest care and affection. The girls who did me the honour of presenting an address looked happy and cheerful and I was very much impressed by

what I saw in the hostel and other buildings of the institution. I wish all the success to the efforts of the managing committee of the institution.

Lucknow July 1st 1938. (Sd). K. N. Catju. Minister of Development, and Justice, U. P.

(२३) "Acharya Ram Deo ji, the Mukhyaadhyapak, did me the honour of taking me round the Kanya Gurukula to-day, and I was very much impressed with all that I saw. The Acharya showed to me proficiency of some of the classes and I was struck by the vast, thorough and the up-to-date knowledge of the girls of this institution which is decidedly far in advance of the knowledge of the girls of the ordinary schools and Colleges.

I wish the institution every success and I will endeavour throughout my stay in Dehra Dun to ....interest in its aflairs.

1-10-38 (Sd). Bisheshwar Nath, Dy. Collector, Dehra Dun.

(२४) "I happened accidentally to visit the Gurukul Kanya Mahavidyalaya this morning. Acharya Ram Deo Ji took the trouble of showing me all about the institution. I am simply charmed to see the working and the spirit of the teachers and the taught. The girls are quite jolly and healthy. Many girls were examined in my presence and I was very much pleased to note that their knowledge is far above the ordinary run of students elsewhere. Every province in India should have institutions like this if we want a regeneration of our country.

Dehra Dun. 16-10-35. (Sd). P. K. Mojumdar, Calcutta.

(२५) Extract taken from the book of Girls Education in India by Shirimati Jyotiplava Das Gupta, M. A., B. T., T. D. (London).

I deem myself fortunate in being a guest there for about two days. Those two days, I think I shall remember as long as I shall live. I reached the place in the evening and a nice little cosy room was glven to me attached to the staff quarters. I was quite comfortable there and felt as if I was among my own people. Then I went to Acharya Ram Deva who was very affectionate and kind to me. We talked for sometime about the institution and its organizations. Then we went to bed after our meal which was very simple but at the same time very nicely prepared. Early in the morning at about five I awoke by some sweet, soothing voice. I got up and out of my room. Being enchanted by that sweet melody and specially at that hour of the day, I proceeded towards the girls hostel. The girls had all taken their bath by that time and were performing their Sandhya and Agnihotram. It was a novel sight, indeed, to find these girls both Juniors and Seniors, sitting in groups with big fires in front and uttering Vedic hymns. I was standing there all the time watching the girls with mixed feelings. After the prayer they sang the songs composed by themselves; then they had their breakfast. Their lunch time was between 9 & 9-30 A. M., when they get dal, chappati, vegetable, curries, milk etc. Each girls gets half a seer of milk and a chattak of ghee every day. In fact no pains are spared to turn out a strong, healthy, well built young woman who will be efficient in household work and be able to bear all the strains of social life. They become skilful in cooking, proficient in embroidery and feminine craftsmanship and fit to take up all the duties of good and capable mothers trained in midwifery, home nursing, domestic medicines, etc.

I had the opportunity of seeing all classes. History is taught up-to-date. Acharya Ram Deo and I put questions to the girls about Indian politics, warfare between Italy and Abyssinia, China and Japan etc and they satisfied us with prompt answers. From the answers to questions upto the girls of higher classes, it appeared that the medium of instruction being the mother tongue the girls could grasp easily even intricate subjects & had the power of independent thinking.

It is entirely a residential school with about 225 girls. Tuition is absolutely free there. All inclusive maintenance expenses, charged from the guardians, are at a uniform rate of Rs 15/-/- a month. The thing that specially struck me was the atmosphere of simplicity and purity of this institution. As a casual visitor passes along through its enchanting walks and looks around, he comes to a spot all on a sudden and finds a group of girls with intelligent books and healthy beaming faces, learning their lessons among the leafy bowers under a shady tree which call up the picture of an ancient hermitage.

Published by
The Calcutta University,
in 1938

(२६) "मैंने ११ जून को कन्यागुरुकुल का निरीक्षण किया। यहां की अवस्था देख कर तबियत बहुत खुश हुई। वातावरण शुद्ध राष्ट्रीय पाया। यहां कन्याओं से १५) मासिक लिया जाता है। इतने थोड़े रुपये में शिक्षा के अतिरिक्त उनके भोजन और वस्त्र का भी प्रबन्ध किया जाता है। स्थान की सफाई पर काफी ध्यान दिया जाता है। कन्याओं को स्वास्थ्यकर और पौष्टिक भोजन दिया जाता है। उनके लिए खेल का भी प्रबन्ध किया जाता है। शिक्षा की अच्छी व्यवस्था है। कन्याओं की योग्यता की मैंने साधारण रीति से जांच की और मुझे सन्तोष हुआ। हिन्दी और संस्कृत में अच्छा निबन्ध लिख लेती हैं। उच्च कक्षा की कन्यायें साधारण रीति से अच्छा भाषण भी दे लेती हैं।

निम्न मध्यम श्रेणी के लोगों के लिए इस प्रान्त में यह एक उत्तम संस्था है। ऐसी संस्थाओं की हमारे प्रान्त में बहुत आवश्यकता है। कन्याओं की शिक्षा पर आजकल समाज में अधिक ध्यान दिया जाता है। आशा है जो महानुभाव कन्याओं के लिए शिक्षा-संस्था खोलने का विचार करेंगे, एक बार इस संस्था का अवश्य निरीक्षण करेंगे।

मैं संस्थापकों को ऐसी उत्तम संस्था खोलने पर बधाई देता हूं, मेरी शुभ कामना संस्था के साथ है। आशा है इसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

१८-६-३८ आचार्य नरेन्द्रदेव

(२७) आज मैंने श्रीयुत प्रो० रामशरण जी एम० एल० ए० तथा श्री वीरवधसिंह जी एम० एल० ए० के साथ कन्यागुरुकुल का निरीक्षण किया। स्थान बहुत ही स्वच्छ पाया। निवासस्थान नया बन रहा है, उसकी आवश्यकता है। भोजन का प्रबन्ध अच्छा है। कन्यायें स्वस्थ हैं। उनके लिए एक औषधालय है, किन्तु अंग्रेजी औषधियां हैं और चिकित्सापद्धति भी अंग्रेजी उपयोग में लाई जाती है। मेरी राय में आयुर्वेदिक चिकित्सा ही कन्याओं के लिए होनी चाहिये। यदि पाठ्यक्रम में आयुर्वेद जोड़ दिया जावे तो स्त्री-वैद्याओं का अभाव, जो इस समय है, मिट जायेगा।

हमने कुछ स्नातिकाओं से प्रश्न किये, उत्तरों से पता चला कि स्नातिकाओं को अनेक विषयों में अच्छा ज्ञान है। संस्था बड़ी उपयोगी है और सहायता की पात्र है।

रा० व० घुलेकर, एम० एल० ए०
प्रधान, बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक कालेज, झांसी

(२८) मैंने १ जुलाई १९३८ को श्री रामदेव जी के साथ कन्यागुरुकुल देखा, जिसकी मुझे बहुत देर से इच्छा थी। मुझे यह Institution देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। मैंने पृथक् २ कई श्रेणियोंकी कन्याओं से बहुत से सवाल भी पूछे। कन्याओं ने बहुत योग्यता से उत्तर दिया। उनकी साधारण वाकफियत बहुत ज्यादा है। कन्याएं बहुत खुश और उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। ऐसा क्यों न हो, जहां श्री रामदेव जी

ने अपने आप को लगा दिया है। यह भारतवर्ष की एक उच्च कोटि की संस्था है। मैं आचार्य रामदेव जी तथा श्री आचार्या विद्यावती जी सेठ को हार्दिक बधाई देता हूं। परमात्मा करे कि यह गुरुकुल बड़ी सफलता से अपना शुभ कार्य करता रहे।

डा० मथुरादास, मोगे वाले

(२९) मैंने २३ सितम्बर १९३८ को मुख्याधिष्ठाता आचार्य रामदेव जी के साथ कन्यागुरुकुल को देखा। शिक्षा के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक अङ्गों को यह संस्था बहुत अङ्गों में पूर्ण करती है। लड़कियों की प्रखर बुद्धि देख कर अवश्य ही इस संस्था के प्रति हृदय में उच्च विचार उत्पन्न होते हैं।

आचार्य रामदेव जी से बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि बड़ी लड़कियां प्रायः अपना सब काम स्वयं ही करती हैं। यह शिक्षा का अत्युत्तम ढंग है और ऐसी शिक्षा प्राप्त की हुई लड़कियां पढ़कर अवश्य ही अपने जीवन को सफल बना सकेंगी। धर्म और देश के प्रति लड़कियों के हृदय में श्रद्धा का भाव है। उनके गाने धार्मिक और देश-प्रेम से ओत प्रोत होते हैं, जो उन्हें हर समय उनके कर्त्तव्य को याद दिलाते हैं। लड़कियों को समाचार पत्र पढ़ने को मिलते हैं और वे देश-विदेश की सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्थासे पूर्णतया परिचित हैं।

संगीत, चित्र तथा वस्तु-कलाओं की शिक्षा इस संस्था में दी जाती है, और साथ ही उनके स्वास्थ्य की ओर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। उन्हें लाठी, लेजिम छुरी इत्यादि की शिक्षा दी जाती है। मेरे हृदय में कन्यागुरुकुल के प्रति जो उच्च भावनायें उत्पन्न हुई हैं, वे मैं आशा करती हूं कि जितनी बार भविष्य में मैं इस संस्था को देखूंगी और भी उच्च होती जायेंगी। मेरी शुभकामनायें इस संस्था के साथ हैं।

(ह०) सुशीला आगा
गर्ल गाइड कमिश्नर, यू० पी०

(३०) कन्यागुरुकुल के सात्विक पवित्र वातावरण को देखकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। पुत्रियों की अपूर्व योग्यता निस्सन्देह प्रशंसा-योग्य है। परमात्मा इस संस्था को सदैव उन्नति प्रदान करें, यही मेरी मंगल कामना है।

१२-१-३९

(ह०) ब्रह्मदत्त जिज्ञासु,
वैदिकधर्म-सेवक

आ: … ा थी पर
का … राष्ट्रीयता
शि … देश की
हुई … गृह रहती
आ … अत्यन्त
मंड … न्नत वायु
परि … अद्यतन
२२ … धात्रे,
… संघ वर्धा
… स संस्था
की …
ता … मदार
… साबरमती)

… rs. The
wh … l with
th … e girls,
qu … know-
le … ess all
Im … lresses,
th … e place
gi … modern
educational institution. The cheerful faces, the healthy looks of the girls, big and small testify to the maternal and efficient care that is being taken on them by the management.

To me it seems that the institution is destined to play a great part in the future in reviving and sustaining that Indian culture, which is being undermined by the infiuence of western education. The girls are taking a long interest in the national movement and in the current world events, and I have no doubt after leaving their present life they will prove an asset to the nation. I wish the institution all success and I think these parents who send their children here will indeed be fortunate.

30-12-39 (Sd). Manzarali Sokhta

(३१) कन्यागुरुकुल देखने की कई दिनों से अभिलाषा थी पर आज पूरी हुई। देख कर बहुत प्रसन्नता हुई। संस्था में शुद्ध राष्ट्रीयता का तथा धर्मपरायणता का वायुमंडल छाया हुआ है। हमारे देश की शिक्षासंस्थायें देश की वास्तविक परिस्थिति से दूर और अस्पृष्ट रहती हुई नजर आती हैं, यह बड़ा भारी दोष है। मुझे यह देख कर अत्यन्त आनन्द हुआ कि कन्या गुरुकुल में शिक्षा का शान्त तथा उन्नत वायुमंडल कायम रहते हुये छात्रायें देश की वर्तमान परिस्थिति से अद्यतन परिचित हैं।

२२-६-३८ (ह०) रघुनाथ श्रीधर धोत्रे,
मंत्री गांधी सेवासंघ वर्धा

(३२) कन्यागुरुकुल की मुलाकात से आनन्द हुआ। इस संस्था की आबादी के लिये परमेश्वर की प्रार्थना करता हूं।

ता० १५-५-३८ (ह०) परीक्षितलाल मजूमदार
मंत्री गुजरातहरिजनसेवकसंघ (साबरमती)

(३३) I spent in the Vidyalaya several hours. The whole atmosphere seems to be saturated with the atmosphere of khadi. I talked with the girls, questioned and cross questioned them, their knowledge, their manners, their resourcefulness all Impressed me greatly. Their khadi dresses, their charts, the whole atmosphere of the place gives it more the air of an Ashram than a modern educational institution. The cheerful faces, the healthy looks of the girls, big and small testify to the maternal and efficient care that is being taken on them by the management.

To me it seems that the institution is destined to play a great part in the future in reviving and sustaining that Indian culture, which is being undermined by the infiuence of western education. The girls are taking a long interest in the national movement and in the current world events, and I have no doubt after leaving their present life they will prove an asset to the nation. I wish the institution all success and I think these parents who send their children here will indeed be fortunate.

30-12-39 (Sd). Manzarali Sokhta

